

1847 H. H. H. H.
2/22 9/26 18/26 2/2

ASHA A. A. A. A.
2217 I



I

हाग विमगथा। प्राफि १ प्राकान्य मालित्यं वलित्यं चावृत्तं नय ३ उमाका सयसी
 लोनीदे सवमीध मालिवा सवानी वृडापीडा धीवा सुवमरुला। अय एषा प्रवती
 इत्ता मृजानी इति काश्चिका आर्या स कायसी चैव निविजामन कः सजा वि
 तायक विद्वान् उदेन उवगसा धिया ३ अथैकदक ह लस्य लस्य द वगजान

काली ३

उद्देश्यमन कार्जग विप्रलया विलोकना अथर त्रमयनाच नय एतदमरु मय

सो ॥ काकाकव
 सो ॥ एताचीमन कार्जग उ वली चमिलारुमा ए कली मरु दायया क थक पान
 एता दूधे ॥ एताची मरु पान ४ स्य वल्लि उ वली मरुवा ॥ हा हा कू कू ल्ये वसा या
 मरु वल्लि दिवो कसा ॥ अन्ति बेल्लान वा वल्लि वीति हा शंधनं जय ४ कया टयानि
 कूलनां जानव दाले नवतपात् ॥ वरि ४ एता कय वसा ट एता वि कली उ व वृथ ३

^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०}
 यन्मातविष्णुसदागतिः। एषद^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०}
^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०}
 ममद्रुजगत्प्राप्ततावत्तमानरत्नघातपवनपवमानप्रहृष्टना। ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०}
^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०}
 सनातेऽपिदानयानोचवायवभागीवत्त्वमनंदलवसीउचयः। ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०}
 वसन्तिरूपानुत्तमं। ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०}
 समानातिद^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०}
 कलमध्यतः। ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०}
 यानांया

^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०}
 आज्ञास्वनेनयनिधयानव॥ ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०}
 आदिवोद^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०}
 क्रियादेर^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०}
 मममन्त्रपूजनीनशाः
^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०}
 कवागगतननकेतुवयत्तस्य॥ ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०}
 वियद्विषयदेवाउपूत्याकागविहायसी॥ ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०}
^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०}
 गलुककुरुकाकाआत्मन्त्रद्वितयता॥ ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}
 पाचवाचीपुगीचकाः ^{१०१} ^{१०२} ^{१०३} ^{१०४} ^{१०५} ^{१०६} ^{१०७} ^{१०८} ^{१०९} ^{११०}
 पर्वद
^{१११} ^{११२} ^{११३} ^{११४} ^{११५} ^{११६} ^{११७} ^{११८} ^{११९} ^{१२०}
 दिवापन्थिमा॥ ^{१२१} ^{१२२} ^{१२३} ^{१२४} ^{१२५} ^{१२६} ^{१२७} ^{१२८} ^{१२९} ^{१३०}
 उरुवादित्रीत्यादि^{१३१} ^{१३२} ^{१३३} ^{१३४} ^{१३५} ^{१३६} ^{१३७} ^{१३८} ^{१३९} ^{१४०}
 दुष्टिषुदिहृवजं ^{१४१} ^{१४२} ^{१४३} ^{१४४} ^{१४५} ^{१४६} ^{१४७} ^{१४८} ^{१४९} ^{१५०}
 वक्रिः ^{१५१} ^{१५२} ^{१५३} ^{१५४} ^{१५५} ^{१५६} ^{१५७} ^{१५८} ^{१५९} ^{१६०}
 ग्रिहपति

दिलिरुतस्यपदाधत्तदि॥

कृष्णजिह्वादि नदि गच्छति क्षिति सुनाम

[illegible]

13

दिग्ग्यामाकिमिपनिराद्यानाम

अनाचा ननादनी ॥ श्रीवाद्ययंत्ययदितादितांमर्मध्वविदिकुचपा ॥ जूखन
 वंतुकनलचकवालउमलुल ॥ अरुमधावाविवादकनयिन्वबलाहफध
 धावाधनांजलधनकठितलान्वाविदाम्बुहत् ॥ धनजीमनमूदिनंजलमूधूम
 यानयशकादसिनीमद्यमालाएवमधरवसियं ॥ सुनिगंग ॥ ऊर्तमधनिधाधिन

मंदातवस्यजलादधस्तु न०१

वयला २
 आदिनाई नक्षत्रनिर्गतादीनां गुरुदी १
 नकादवा २ वज्रपतनजतिनायका २
 दिवा (नवविंशतमः) १२
 यवप्रसायानाम
 सिगादिच। गम्या। गऊदाकै जादि नैवा वल्यः क उ पु ता। तति सो दामिनी विद्युच्च
 चलां जूपा। हू ऊं पू र्वा निधाय मघया तिनितमद ४॥ ॐ उ। यूर्ध्व गऊ
 धत्तु लुद वज्रनाहिनी। वृद्धिर्वर्षक दिवा ग वग्राहा वग्राहो सुमो॥ धा नासं या म ज्ञा
 ता वः शी क वां मू क ना ४ ह ना ४। व धा य ल लु क न का मघा छि त्र कि इ दि न॥ अ न क इ
 धा नायानाम
 महादृष्ट १
 मघा वज्रवक्रता २
 वा ३ व विंशतमः ४
 अनादृष्टः २

अकृष्टी वायव्यादि १
 कृदने अति च १
 धातायानाम
 यवक्षायु सिल्ले न दि न प वा न री। अ पि क्षा त ति वा क्षा त पि क्षा न च द नानि च॥ हि मा
 लुं च लु मा न्ध लुं २ ३ ४ क मू द वा म्भ व॥ वि धू ३ सु क्षां लु ४ लु गी लु ना म धी र्णा नि ३
 मा प मि ४ अ ऊ जे वा ल क ४ हा मां ग्ले मृ ग क ४ क ला नि क्षि ४ दि ज वा ज ४ गी ध ना
 न क उ ग ४ क या क व ४ क ला उ धा उ ४ हा मां वि म्भा स्त्री म लु ल कि मृ ४ रि कृ ४ क
 च लु म्भे व धा उ ४ हा ग ल क ला १
 व वि च लु म लु ल म्भे १
 दि या म लु ली १

१। कलरा लोवापुलि गो० उल्लरा खउ वयस मथा द क सज्ज
 वला नि र्वा उमाठस्य० वदि योनाम
 लख ५७ वायू सङ्गि स मं स क॥ चलि का को मदी छात्ता ७ हां दमु पु स न गा क
 लंका० को लां चन च चि कं ल म च ल रु गं॥ सुष माय न मा ११ हा ११ हा का नि द्वि मि
 वि ४ प लि ४ क उ ध्वा लि मं नि मि रुं वं जन पद॥ पु र्ण न चा म्प हि र्ण न ल ला
 म च॥ जू व म्मा यं सु ता हा व मु वा व मु हि न हि त॥ पाल यं म हि का चा ध हि मा नी दि
 निर्मल स्यात् कल कं ल्य स उ चरु विद्रु व स
 निर्मल चानाम चउ कि न रा यानम निर्मल चानाम
 क र्म चानाम सामान्य विद्रु यानम
 सामान्य शा वा चानाम
 चोपायानाम
 म हि का ल द ४ अ ति न ग
 नि नि र्वा मं हं स्ये

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मम हृदि गीतां गुह्यं दत्तं सुधामं ॥ लिलिषन्नाजुतं शुभानं ॥ गीतलं गीतां
 हितं सुखाच्छलिनां ॥ ॐ वंजेनानयादि ह्यादगत्तं ॥ कुरुतं रवशं मेजावद्वि
 वल्लेवसायामुडासधार्मिणी ॥ नरुमृकं हंगानां नकायूडवालिनी ॥ दाहाय
 विनीत्यादिनां ॥ अथ युगविनी ॥ वाक्षविनां ॥ पूषा ॥ दुसिधमिषो ॥ विष्टया ॥ सु
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमस्तस्मिन् उपलिङ्गानां नानाकाराणां ललाटस्य

जुगहायनी पादप्रतिनि

प्रदिष्ठ न जलया तम

सर्वतुल्यमदत्तुनरुत्तमस्य

नृगलिव

नाथनिष्ठास्य षोडशपदांतादयदाः स्त्रियमामृगशीर्षमृगजिनकुलिनैवागुह्ययदा

मृगशिरसस्तु यथासुखं गतिमिति

॥०॥ ललाहृष्टिनादलातानकांनिवसन्निशा॥ दृढहृष्टिनि॥ सुनावाथा॥ गीष्टिनि॥ द्विष्टिनि॥

कृष्ण मिश्र नाम

गुरुः शिवाय नमः सा वाचसपतिं लिखति ज ॥ १॥ कां देव गुरुः काय उ ॥ नो

ॐ नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

लार्गवः कविः ॥ अज्ञानकः कृष्णः ॥ लोमादिताः ॥ मदीसुतः ॥ बोद्धिः ॥ यथाऽवधः ॥ सोम्यः ॥

١٤

ममः हातुः नव्यैः सैः जनकाः (धैः) न॥ न॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मविबिज्जि प्रहला प्रह

सुदेवः

नानिश्चयानाम

नाक्षत्राभि

अनि नक्षत्र

४॥ समो तो विलने ग्य को । तम लु वारु ४ ल हनु ४ से हि क या वि धू लु द ॥ ल क र्व या म ना र्व

॥ हृदयं ज्ञानम

लघुयाताम

सि मूखाब्धि उल्लिखित नमो नाडीनामूद याल्ल गतं मनु मय दृष्टाद यमो हून ह्ययि च

मादि सदादः ॥ त्मादि वाक वा ॥ लाह ॥ नोह ॥ कन ॥ धु ॥ यहा ॥ कव ॥ विला ॥ कवा ॥ लाह ॥ दिव

सुखं कायं रुचिदं च ब्रह्म यः विफलं तार्क्यं तर्ह्युनिदिवा नृणां दृष्टं ॥ ३ ॥

आदिना दनमिधुनककटसिहकन्याउलाठमिकधनमिकनकसमीजानीउमन ३

इन्द्रं सर्वकल्याणं स्वर्गपुत्रं पृथ्वीपुत्रं तत्र दिनात्कुरु सारं सन्ध्यापि ह्यसुखा
 काश्यपाय सखा काशिसंभ्रमं सत्तुर्वीर्यं निरतिशयं निरतिशयं निरतिशयं निरतिशयं
 पावितावती तमस्विनी वज्रनीयामिती गती तमिना गानसी नाचिः शोत्सी चतुर्दश
 चिता आगमिदरुमानादयुक्तायां निलयकिरी गदावर्गनिर्गन्धं वक्षःपुदाधो वज्र
 वरुणास्त्रायुक्तायां निलय

नीमूर्खः पूरुर्ध्वं वागुनिगीषोक्षोद्योयामपुदकोसमोः संपर्वतान्धः प्रमिषत्यश्च दयाय
 दकुर्वन् पद्माकोपश्च दत्तः ददत्तुमासीदुदत्तुमा कलाहीनं सातृमतिः दत्तुनाका
 निष्कवः प्रमावत्तात्त्वमावाह्यादगीः सत्यं दुर्गमं गासा दृष्टं दुःसिनीयालीसातृद
 फलाकुरुः उयवागंगुहां वादुग्रकृत्स्निं चयूक्षिं चासायप्रवापनको वावेन्युत्पा
 वरुणास्त्रायुक्तायां निलय

[illegible]

॥ विष्णु वस्य नाम दय ॥

सुनहि प्रलिन २

कतिनाया

सुनरुह्यः षोडशपदहाडहाडपदाः समाः ह्यकदाचिनः ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

कार्तिकः वाङ्मूलोकार्तिकिकोदमकः लिलिवालिगोवसुकपूषासमयं सुनरागः

माउषाकः निदाघउकापगमउकाउकागमलुमः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

यीः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

२०

समागवस्यवद्विषामवत्राकाजयादिव लोनुसमीविजायमः ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

वत्समाः मासुनस्यादेहावागः ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

उमोद्वः मन्वक्तं नुदियातायुगनामकगफमिः ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

कल्याकः ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥

धर्महाइविष्णुताहाहर्ममलुयापूवदः ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

जल मन्त्रेन मन्त्रिका दयः ४
बद्वर्षजमककर्मदीया चेलिना ४

१५ मदाभादसमदाभासादानन्दध्वानन्दः १॥ म्मितामसुखानिच ॥ नि० प्रयसंलिव
रुडकल्याणममलंशुतं। तावकसविकंरयंकृणलंकममलिया ॥ लंकचोधिषूड
यपायपूष्यसुखादिवमन्त्रिकासचर्चिकायकाउमूयंगतुओ ॥ पुणलुवाचकाय
मूयय० शुतावक्षविधि० देवदिष्टागधयराग्नानियतिविधि० ॥ दुर्वाकानराः

पापूष्यमदेवाचलिनो सुखादिवमलपयंकउयवरुमानवाचलिन ॥ तथावाक ॥ पापद्वी २ देवगानाम ॥ उमगीकन्यापापरागायन
रकभपापयाधकूनलिउपाधाविषयसवकभपूष्यगीर्णदिष्टयावदपूष्यायमापुय ॥ सुखाययतिनि कनीसुषवेमययदुहा ॥

कारकगमयिजमसुयवनादः अवस्का ७ क २
सन्तनगमसर्वात्मकेयुक्तिः १५ भाव २

वीर्जनिदानं त्वादिकावली ॥ क० ॥ पूष्यसुखादिवमन्त्रिकासचर्चिकायकाउमूयंगतुओ ॥ पुणलुवाचकाय
लिफावल्हागुवा ॥ सत्यनजलत ॥ ज० ॥ पूष्यसुखादिवमन्त्रिकासचर्चिकायकाउमूयंगतुओ ॥ पुणलुवाचकाय
उचतनोजनीजकुजयलवाविद्य ॥ जातिजति ॥ सतामान्ययकिंलुपधमलिका
गचिलैकउचतनोदयस्यकहमानहमन ॥ दृढिर्मनीषाधिमध्वी ॥ पु० ॥

गतातात्र के नम ॥ पुष्यादमाजनके वाचलिका ३
उमगीकन्यापापरागायन ॥ उलादिकंनकयलशसुतिनकाजम

सत्यनजलत ॥ ज० ॥ पूष्यसुखादिवमन्त्रिकासचर्चिकायकाउमूयंगतुओ ॥ पुणलुवाचकाय

[illegible]

संमृदा मतिः ॥ यद्यप्यलङ्कितं तस्मिन् लियं गुरुं किञ्चन ॥ धीर्जनैश्च बर्णितं

॥ वासं कल्याणाम् = ॥
वासं कल्याणं कर्मनातम् ॥ विष्णुः सांगम तस्मान्नय च सिन्ध्या विद्या नक्षत्राणां

वस्तुर्कृतं विविक्तं संशयः संदहं दायवो चाधसमो निर्दुयनिप्यथो नि

॥ दृष्टिर्नास्तिकतायापादां हारु विकृतं । स मोक्षे हाकनो हाको गतिमिति मक्तिः ॥

सिद्धांतः नानाः दोषाः सिद्धांतस्य १

संवि०. आयुःवर्णिक्योः ।

गिराजकुआदिभ्यः बृद्धिः विज्ञानं

शुद्धिप्रधानम्

म ४॥ सन्निदाय ४ युति ४ म नित्यमाद्य वसद्यवा ४ म्मीकानात्य पग सद्यतिद्य वसमा

धय॥ मा० का० श्रीरुनिमन्युविज्ञानं लिख्यमाणं अ० मुक्ति० केवल्यनिष्ठा० प्रथानि

४१ प्रयसाहने। माहायवर्णाथाज्ञानमाहाविद्यापदमति॥ नृप॥ वावेसुखगमिन्वा

यविषयाऽमीनां च नान्दियाध्वि रूषीकं विप्रयादियं ॥ कम्पदियनुयाद्यादि

द्वितीय विषयः गन्धर्व विषयः मन्त्राचारः अथ गन्धर्व विषयः
अथ विषयः अथ मन्त्राचारः अथ मन्त्राचारः

श्रीगणेश नमः

[illegible]

संसाधनस्य लक्ष्यं दिनादस्य
उद्देश्यं दिनादस्य ३

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अग्निनक्षत्रादयः

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुहादः स्यादनुवाद्यजः यः कीर्तिः समस्तः चक्रवर्तः कर्णः त्रिभुक्तिः प्रभुति

नमो भगवते वासुदेवाय

नदकुनदीव्या

२५॥ कर्न रुदनहा नव क्षया या

गंदिस्त्रिकमूत्रैर्घृष्टनुषाप्रसा। काकः॥ लिप्याविकावायः॥ कहीत्यादिति द्वेनभ

25

अपहृष्टिपनिषदिपनिषदपवादवत्॥ उपकाराशुभाचक्षुषानिन्दचग

हं॥ पात्र^{१३} म^{१३} लि^{१३} वा^{१३} दः॥ वा^{१३} रु^{१३} त्ति^{१३} नं^{१३} त्व^{१३} य^{१३} का^{१३} न^{१३} गी^{१३} ॥ यः॥ स^{१३} नि^{१३} त्दं॑ उ^{१३} पा^{१३} ल^{१३} कृ^{१३} त्कृ^{१३} त्वा

अतः क० १ पृथक् नल २

अथ श्रीगणेशोपनिषद् । अथ गणेशोपनिषदः । अथ गणेशोपनिषदः । अथ गणेशोपनिषदः ।

ॐ नमः शिवाय ॥ १ ॥

पत्रकी निमित्त पत्रपूत्र निमित्त बा ६४ लानक विरय का १११

त्यनिहायदी॥ १॥ तत्त्वाकान्तस्य० त्यादाक॥ १॥ तमेधूनस्य॥ त्यादाहायदी॥ १॥

बालमहादेवचरणाय

प३ पुलायाः नर्थकं वच॥ अ३ नूलाया मूक रुषा विलाय३ प३ पनिद वती॥ वि३ पुलाया वि३

सप्तशतिकावतनया

सूचयनयातासु

जुयनाधः नमः साह ज्ञाय

बोधायकः संलापात्तावर्गमिथः सुखलायः सुवचनेन मयलाय लुनिक्रवः संद

दुःखया नाम

अमंगलवस्तुनयानाम

गंगा गच्छति कैल्याणं रुद्रास्तु जैरुद्रं ॥ उषसी वाग कल्याणी स्यात्कल्याणं तु तुहा

गोधा वनिग वरतस्य २

सिका॥ अथ मधुर्वसान्तं सप्तमं दयं गवम॥ निवृत्तं यत्र षण्मास्यमासीत् लहृ
नं पिय॥ सत्यं सकलं कृत्वा यत्र सवयवाहना लकवर्तु यदग्रं नित्यं त्वविगाः
दिगं॥ अमुकं गं सनिष्ठं सर्वं दं स्यादं नर्थकं॥ अतः नवमं वाच्यं स्यादाह तनुं मृषा
र्थकं॥ अथ लिखं विस्वविगं धत्तं नवच॥ सत्यं गंधं नृत्तं सत्यं गंधं नित्यं

एतच्च कथां बलिनिर्मितं सति वीर्यं (मृकं) २
अथ कथं वचनस्य
लिखकं न निर्गमसति वचनस्य २

२१

वधमर्हय वीर्यं वचनस्य ३

कृताहिं कथां दरीनां जालां यथा २

नाथा को गलिकारं ऊका॥ रगिनी पतिं वा वृत्तां ता वा विद्वान् धावृजं जनकायूवना
जमुकमावाहं हृदानं कथां वा जातं दावकां दवत्तु गार्हं दानिका॥ दं दी कताहि
षकायां गवात्तु च हृदिनी॥ अथ मधुर्वसान्तं सप्तमं दयं गवम॥ निवृत्तं यत्र षण्मास्यमासीत् लहृ
मा गोधवाला स्यादाहं नार्थं कुमाविषं॥ अकिं कारगिनीं कथां नित्यं नित्यं दं सत्यं

अथ मधुर्वसान्तं सप्तमं दयं गवम॥ निवृत्तं यत्र षण्मास्यमासीत् लहृ
नाहं १॥ अलस्य २
अथ मधुर्वसान्तं सप्तमं दयं गवम॥ निवृत्तं यत्र षण्मास्यमासीत् लहृ

वनल्लादितामवधुदलकाः २

पनस्यालुजीया

अनादनसुनामानि

सुखायानाम

तावत्तु च जवहलमल्लकरी मन्दाकं जीरुयाथी अलज्जिमापे उपाय नः कानि

कसायानाम

पनधनसलाह

मधुहउयुवा

सिगिराहिष्ठा उपनस्य विषयस्य हा म्भ्यानि वीष्ठाः सुया उदा म्भानाया गुला

सिद्धिगतिदधव

विश्राधत्य

बदलमकस्य

षपि विन विना धावि द धामन्यु गमकोरु गुक्ति ० याम् पय्यता यानू नायं य

पासतायगम

उमयुतिग

आधयानाम

विपुती सानं एपि कामका धामप ना पुनि घानू क्क धो मु यो पुचो उचन

विपुति सानक धावि

पनापयया जूसहि म्भु ताया २

मनसवीजनयुगमक २

३१

निः प्रपगीलस्य

उमादस्य

अमयानाम

तालीलमूमादस्थिरुविउमशः प्रमाना पियता हादय मल्ल हाथ दाददं ॥ ० ॥

मनानधयानाम

काकास्य दह हट्वां कालिप्ता मनानधः कामाहिला प्रसू मय्यसमस्तानुला

महाहिला घस्य

धर्मस्य विनाया

मनहः पीठयाः

उमसनेस्य

लसादथाः उपाधिर्नाधर्मचिकपुल्याधिर्मानही यथा स्याच्चिकालिनाय

क्रियो

उत्साहस्य

नमूलाः अकलि फसम उत्साहाश्च वसाव सायः स्यात्तु वीर्यमिति ॥ किलाक्

सनलोनदुनकोलाकस्य

अनिगविनाश्च वसा यस्या

२. तु अथ मृत्तमनसा विमानं जनानां च दृष्ट्वा च धृष्टं च कृतं नाम युतिं तया युयु

सूत्रकेटवदनपूर्वकः कृत्स्नः श्री यामिनी कृतिः क्रियाः श्री यामिनी पूर्वकः श्री यामिनी

कपटाक्षीयाजदकापधराभूयकेनवाकृहतिर्निद्रुति॥ १॥ ॐ पुमादाहन

वधान गा॥ कोरुहली को रुक ^{को} रुक ^{को उरु याना} रुक चक रुहली को ला विलास वाकि विरमा

ललि० न० थ० ह० लाली ल० यमी ह० वा० क्रियाः १८ क्षण हा व जा० उ० व कलि प्रवीह

सां० काशी लाचन मंत्र । बाजा । पदाल लक्ष्मी को जल खात कूटन । घमा

[illegible][illegible]

वक्रानिवत्ता इति ॥ ४ ॥ अथ दत्तपत्रादीनि मन्त्रादीनि वक्रानिवत्ता इति ॥ ४ ॥
लक्ष्मणं च दत्तपत्रादीनि मन्त्रादीनि वक्रानिवत्ता इति ॥ ४ ॥
विद्विवाशः कान्तः उद्यातनागीवदनाः प्रीतिवाक्पद्यधः ३४ स्वसमानस्तः
पुनर्गिर्जः ॥ ५ ॥ अथ दत्तपत्रादीनि मन्त्रादीनि वक्रानिवत्ता इति ॥ ४ ॥

पावादावः सवित्यतिः ॥ उदन्वानन्दः सिद्धः सवस्वान्सागः बालुवः ॥ वत्नाक
 बाजलनिविद्यादः पतिवपाम्यातिः गत्यः बहदाः कीर्नादालवनादस्तुथायवः ॥
 पः फीरुनिवाद्याविसलिलकमलजलैः ॥ यस्यः कीलालममृगजीवनं उवनः
 वनः ॥ कवन्धमुदकपाथः पूष्कर्वसर्वनामूर्खः ॥ अम्हाः ॥ अम्हाः यपातीयशीवनी

श्रीवृद्धादिनी॥ सांयाणिक॥ धामदालिकककुम्भनाविक॥ नियामका॥ धामवा
 ला॥ कृपकायुगवृक्षकमानोकादशु॥ शयणीत्यादविनिर्गन्तनिवागक॥ अत्रि
 ॥ श्रीकाशकदालह्यानवाहु॥ उपागावित्तदक्षिणसमृद्धिया॥ सामृद्धिकामन
 विजगादोनो॥ समृद्धिका॥ श्रीवृद्धनायनावाहु॥ गन्तनोकनिर्गन्तुषुहैकैयोरु

३१

सवर्त॥ शिवागधाल्यसन्ना॥ कलूषा॥ ननुआविल॥ निमगतीनगतीवमूला
 नगदिपर्यय॥ आगधमनलस्यर्गकेवर्तदालधीववो॥ आताय॥ प्रसिजालस्य
 दालुपविशक॥ मत्स्याधालीकवलीत्यादतिमत्स्यवदत॥ पृथुनासाजधामः
 त्स्यामीनावेलाविला॥ उजशविगमन॥ कलीचाधगतक॥ धीकलार्क॥ सरुस

ददुःपापीनउल्लपीनिगुकासुनो। नलमीनधिलिचिम० पा० श्रीउसरुनीवः
 या० रुडाउमल्लसंघात० पा० पा० धानन० ध० म० सा० बादितामहुल० पा० ला० वा
 जीव० ल० कल्लिनि० ति० मि० द्वि० ला० दय० ध० थ० या० दा० सि० ज० ल० ज० न० व० भ० न० म० ह०
 दा० नि० गु० मा० वा० उ० ग० ला० न० जी० व० ल० क० वा० म० क० वा० दय० ॥ त्या० क० ली० ल० क० क० ट

३८

क० क० म० क० क० पो० ग्र० हो० व० हा० वा० न० क० लु० क० लो० वा० य० म० हो० ल० ना० ॥ ग० लु० प० द०
 १ कि० श्रु० ल० कानि० हा० क० ल० धि० का० स० म० ॥ उ० या० ने० ध० व० नो० धा० व० ने० ध० या० ने० धि० काः
 ल० ज० ॥ व० क० पा० उ० ज० लो० का० या० लि० या० ल० मि० ज० लो० क० स० म० क० ला० ट० १ उ० या० ग० कि० १
 ग० रु० १ त्या० क० म० व० लि० यो० ॥ रु० ड० ग० र्वा० ग० र्वा० न० र्वा० ग० म० क० ज० ल० उ० क० य० ॥ रु०

कमलु कवर्षाह्मन् वधुवदईना ॥ लिली गलुपदीह कीवर्षाह्मन् कमली इ
लि ॥ मल्लुं दुवस्येयान् मी इ नमिदीय कासिका ॥ जलाया जलाधवात्
जानाथ जलाऊद ॥ आह वलुनिपानत्ता इयक पजलाय यवस्यवाभूप
दीह्मपउदयनलुपूनिवा ॥ नमिलि कास्यवीना हाम्स्ववन्धनमस्य यत्पूक

३२

विष्मलु खान् ह्यादखान् दवखान् क ॥ पत्रा कवर्षा जलाह्मन् कीकासाव
सुवसी सुवश वरान् क ॥ पल्लुत्त ॥ सुवावापी उदीर्घिका ॥ खयलुपवि
खा ॥ धनल्लुत्त ॥ सुयगुधनदी ॥ ह्यादालवाल मावाल मावापाधनदी
सुविग् ॥ ननकिरीली वलिनी गदिनी ऊदिनी धूनी ॥ आनल्लुगी दीयवगी

सुवक्त्रनिम्नमायगा॥ गङ्गाविष्णुपदीजङ्गमनयासुवनिम्नमा॥ लानीवधा
उपयमासि सागाशोष्मलनपि॥ कालिन्दीहृद्यतनयायमूनामन
सुसा॥ ववातुनर्मदासासाहवामकनकनका॥ कनगायासदानीना ४०
वाङ्मालेगवाहिनी॥ गिरिङ्गुलङ्गङ्गः स्याद्विपाङ्गादुविपाङ्गुलिर्गङ्गा

लङ्गाविनयवाङ्गः स्यात्कल्याल्याङ्गुलिमासविन्। लानीवगीवजुवगीचतु
लङ्गासुवस्वगी। काववीसुनिगान्यात्यसुर्दः सिन्धुसुर्दः स्याद्विपाङ्गुलि
पयसुः पदव्याप्तिवृत्तुनो। दविकायासुवयाश्चरुवदाविकसानवो॥ लो
गन्धिकरुक्कलानंदलकं वरुसंध्यकं। स्यात्त्यलकं वलयमथनीलाम्बु

जन्मच॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
द्वानि पर्वत उक्ताम् ॥ जलनीली तुलोवाली गोवलाथ कमुदनी । मूकदि
नानि निन्यालु विस्तिनी पद्मिनी मूखा ॥ वायुं सि पद्मं नलिनमव विन्द महार
ल । सहज पञ्चकमलं गगनपञ्चकं ॥ गगनपञ्चकं वृहं गगनसं सवसी

वृहं ॥ विसृष्ट नवाजी वयस्क नाका वहालि वायु पुत्री कंतिगंका जमथ
नका सना वृहं ॥ नका त्यलंका कनदं नाला नाल मथ क्रिया ॥ मृगालं विसृ
मजादिकदम्य वृष्टमक्रिया ॥ कनहाट ॥ लिहा कक ॥ किज्जर लक ॥ कगना
क्रियाम् । सम्यक् कानवदलं बीजका भावनाटक ॥ उकं स्यात्तमिदिका

ली।समातोमवृधन्यातोदधिलायुदहनसम॥विषयजगतीलाकःपिद्वयउद
 नेजगत्।लाकाःसंतावर्गवर्षिनावल्यासुयावध॥दगः॥यागदकिताभाच
 उदीच्यः॥यच्छिमाकनः॥यल्यकास्तुदगः॥स्यामधदः॥सुमधमभास्यव
 रुः॥पूथरुमिमध्विन्धिमालयाभावीदृजनयकादगविषयो रूपवर्तनी।

४३

कागृहणाहादवलिर्नवसप्तनिकनन।निगतवस्तुसदनरुवनाम
 वमदिनीगृहाः॥यसिचरुम्यवनिकार्यनिलयालयाभावात्॥कृष्टादयाः॥
 लासरासंजमनीविदी।चतुः॥लमूनीताकुपुष्पलाठजाः॥क्रियाः॥चैत्य
 मायगनीउल्यवाजिगालाउमन्नाभादगनील्यगालापुपापानीयभाः

[illegible]

जामकः पूनं स्यादववाधर्गः शुद्धात्कल्याणवनाधर्म्यस्याददः काममल्लियाम्प
 द्यायः पुद्गलालिन्दावदिर्धनपुकाष्टकः गृहवप्रहणीदहल्यदनं चत्तनाजि
 वः अथलादात्रुलिलिलावाग्मदानूपनिस्त्रिंशुपुच्छनमकध्वनिं स्यात्पुद्गदानं
 पुपुक्ककः भवलीकनीषुपटलसाकथपटलश्चुदिशः गायानसीतुवउसीच्छाद

नैव कदाचि। कथातया लिकाया लुविठ कूपेन पूं सकं। श्री दार्ढ्यं पुगी हानः
स्यादिगार्दिमुवदिका। मान। एम। श्री वहिर्न दायून दानु। मपून। कूटं दार्ढ्यं वि
यदस्ति नखस्तस्मिन् नथ निष्कयाटमननं दुल्यतदिक्कस्तर्जलं नता। आवा ५१
हर्षास्यात्तापानीनिः। एविस्त्वधिनाहणी। सम्पार्जनी। एमधनीत्यात्सकवावकन

कथा। किं मूरवीनिः। सुवर्णं सन्निव। एमनिकर्षणी। सुमोत्तमसुथग्रामो। दग्धः
रुर्ध्वलुनक्रिया। एममाकउपगल्यं स्यात्सीमसीमक्रिया मूरु। द्यावमसीनवल्ली
स्यात्प्रकृतिः। सुवर्णलशः॥ ॥ नृमिपूनवर्जः॥ ॥ मदीधुलिरवनिष्ठा
रुदहार्यधनपर्वणी। मूरुदिगा। मृगिनिग्रवाचललेललिला चया। लाकाला

कथं कवा उलि कटलि क कलत्स मो अल्लु च न म आ ह इ द य १ द र्व प र्व म भा
हि म वा नि स धा वि न्धा मा ल्य वा न् या वि पा उ क भ स क्का म ल य मे ता क १ के ला ण १
सा न् मा न पि का १ स म न्द न र्ग सा न् कि सु का व क्का ण य न शा ग न्ध मा द न म न्ध च ह १
म क्क व द यान ग भ पा वा ण पु ल्ल व ग्ग वा प ला ध्मा न १ गिला इ व न् १ क्क टा मु नि ष न् १

१ १ प पा ग स्स ग ण ह उ १ क ट का १ मु नि ग म्हा ड १ त्त् १ पु ल्ल १ सा न् व लि यो १ उत्स
१ पु स व ल वा नि पु वा ह नि र्झि ना ज न १ द नी उ क त्त् वा वा ल्हा द व र वा न वि ल गु हा ग
क न ग उ ले ला लु चू ना १ स्कु ला य ला नि व १ र वा नि १ क्किया मा क न १ स्या त्या दा १ पु
त्य का डं वा स ना रु मि व र्ध म धि ल्य का १ धा उ म्मि त १ गिला य ड १ ने वि क लु वि ण य न

॥ निरुज्ज्वलं वाक्पुत्रं ललादिपिहिमादव ॥ ॥ ॐ निलोत्तमवर्ग ॥

अथ वक्ष्ये विप्रितकाननं गुरुदीवनी मह्यवधमवधानीष्टनामात्तु निष्क
दाः अनामः स्यादपवनं रुचिमवनमवयत् ॥ अमात्यगलिकाः गदायवनव
रुवाटिकाः प्रमाताः श्रीरुउद्यानं नारुः साधनदीवनी स्यादगदवयुमदवनम

कः प्रवाचिर्गोपीधालिनावलिः पीकिः प्रलीलस्वातुनाजयः वन्यावनसहस्र
स्यादकुनातिनवाहिदः वृक्षमदीनरुः गः रवीविटपीपादपकुत्रः अनाकहः
कः ० ॥ मलः पलासीरुद्रमागमाः वानस्यस्यः रुलेः प्रव्यालेन प्रव्यादतस्यमि
गाडावधः रुलपाकाकाः स्यादवधः रुलग्रहिः वः रूलावकः गीचरुला

पलाङ्गि कुदने दलं पङ्क्ति कुदः प्रमान्। पल्लवा स्त्री कालं विष्णु वा विद
 पाश्र्विण्या। वृक्षादीनां रुलं सत्यं वृक्षं यत्तव वन्धनं। आभरुलं सनादः स्यात्कुः
 क्वानमृशेषू। कानका जालकं स्त्री व कलिका कालकः प्रमान्। ध्यः कुक्कु
 मुक्तवकः कृमला मूकला श्रिया। श्रियाः समनसः प्रथा पखनं कसर्म समं।

५१

मकनन्दः प्रथानसः प्रनागः समनानजः। द्विहीने यत्तव सर्वदनीनकादराः
 श्रिया जालकवे। वया कने यत्तव कुदं रुलं वार्दगश्च रुलं जं म्वा वा जम्
 ॥ स्त्री जम्वा जम्वा कं। प्रथजानी पुरुषयः स्यालिनी। श्रिया रुलं। विदया श्रिया
 मूलं। पिप्रथ स्त्री व पिपाटला। वाघि रुमं थलदलः पिप्यलः कृञ्जवागानेः

अस्तु कथं कथितं स्युर्दधितुं ग्रहि मन्मथं भगवन्मिन्दधिरुल ४ पृथ्वरुलद
 कथा भवपिउड इत्येव जनुहलज क्का ॥ १ ॥ ह म इ ग्व क भ का वि दान च म वि क ४
 कृ दाला यू ग प रु क भ स फ व लु वि ग म ल त्व क्का न दी वि ष म क्क द ॥ १ ॥ आ न व ग्व
 ध ना ज व रु स म्पा क च उ न रु ला ॥ १ ॥ आ न व ग ४ या वि दान क्का ग म ल स व लु क ४

५२

॥ स्युर्जुवी नद क ॥ १ ॥ ज रु उ म्मी न ज ला ॥ १ ॥ व न रु ॥ १ ॥ व न ॥ १ ॥ स उ क्ति क्का ॥ १ ॥ क ४ क
 मान क ४ पृ न्ना ॥ १ ॥ पृ न्ना ॥ १ ॥ पृ न्ना ॥ १ ॥ क ४ वा द व व ल्हा ॥ १ ॥ पा वि रु ड नि म्म ग र्म
 न्दा व ४ पा वि जा न क्का मि नि ॥ १ ॥ स्य न्दा न मी न ॥ १ ॥ रु न मि म्क क ४ व ३ ॥ लः
 लि ग क्का थ द्वा पी न न क पी न नो ॥ १ ॥ आ ना न क म धू क्क उ गु उ पृ थ म धू क्क मी ॥

वानपुष्पमधुखीलो जलजम्बू लकः पीलो उठ रुलः संतागस्मि लुगि
 विसृज्य व। कौञ्ज उ कर्पूनालो द्वावः ८५ ८६ उनिकाचकः पलाणकिं पुकः
 पृथ्वीवातवाः ८५ ८६ वनमानवाः ८७ ८८ विइलणी गवानीन वः ८९ लाः ९० होयनि
 याधविधूलो नादयाचाम् वनम् ९१ ९२ लाः ९३ न लिङ्गनी कृन्तका कीव माचकाः

५३

नका मोमधुसिधुसिग्रः स्याद निष्ठः रुनिलः ह मो ॥ विल्वः १ ॥ लिल्यः २ ॥ लो लुषो
 मालू वणी रुलावपि। सुकाजटी पक्कटी स्यान्त्यः ३ ॥ ८५ ८६ व रुपा द ८७ ८८ ल वः
 ला वला वाधुमिनी रुहिल माऊ नो। ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 कृष्णाल लल कक्षी वकोलिका गुल्लु १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११०

वक्रवानकशनाजादनयियालसालनकऊईनः यठशगकनीसर्वताहडा
काभनीमधूपलिका।णीप्रकुतिउप्रकुतिचकास्यस्यप्रथदयाशककन्य
वदनीकालिः कालंकवलरुनिल।सोवीनवदनधाष्टाप्रथस्यात्ताइक४
कशविककगः प्रवावतागुनिल।वाद्यपादपि।नेवावतागवः कानादयी

५४

हमिजम्बूका।गिन्दकः सुकूकः कालः स्कन्दथलितानक।काकडः कुलककाक
पीलकः काकगिन्दः का।गालीरामाटलाघः पाटलिम्भिकमूकको॥गिलकः
वकः गीमान् समोपिचूलभावको।णीप्रलिकाकूमदिकावृकाकेटयकइला।
प्रमूकः पटिकावः स्यात्पदीलाकापसादनः।नूदसुपः प्रमूक।वृका

वक्रदानुच। हलश्च नीपपिथककदम्बालुहनिपिथ। वीनदृक्ता २ वक्रवाग्निसू
 खीरुत्तागकीपिष। गदहा ७ कन्दकालकपीननसूपाध्वका॥ ह्यध्वगिनिती
 विश्वसिद्धिकाथपीरसानक। सूर्जकासनवध्वकपूषपिथकजीवका॥ सल
 कुसूर्जकायाध्वक ७ का॥ गत्यसाम्यब॥ नदीसजावीनतनुमिउ ७ १ ककूसाई

अज

न॥ वाजादनरुलाध्वकजीविकायामध्वका॥ रुद्रुदीगापतनरुई ऊचमि
 मृदुत्वचो। पिच्छिलादनवासाच। हिवायू॥ गालमलिईयागपिच्छउ गालमली
 वक्षवाचन॥ कटगालमलि॥ शिवविल्यानकमाल॥ कनज॥ कनज॥ कनज॥ कनज॥
 कार्य॥ दमिकनज॥ दमीक॥ कनिकावज॥ कनज॥ रुदा॥ वक्षुकासकशमा

नवलनी। नादनादिनकः १ ह्रीं ह्रीं ह्रीं दीति मयूष्यकः १ गायत्रीया लगनयः
खदिनादकधावनः १ अविमकाविदू खदिनकनदः १ खदिनसिगसा मयल्का
पथयासुपूक गन्धर्वहस्तको। १ वलुउवृक कवचवृक खिगक यम
वचः १ पचमकुलामुवईमानयउम्यका १ अल्लासमीसमीनः १ स्याचमीस

५३

कुरुलालिवापिछीटकार्नेनेवकः १ ससनः १ कनहाटक १ गल्लायमदनंग
कपादपनिपाहडक १ रुडदावृईकिलिमयीनदवृचदावृच। यनिकाष
सफस्यद्विदान् यथदया १ पाटलि १ पाटलामाया काचकालीरुलवृहा। क
कृकाकृवनातीः १ ममाउमहिला कया। लगानावन्दनीगुन्दापियंगु १ रुलि

नीरली॥विषय नागधरुलीकानकाप्रियकथसा॥मधुकपलुपशुन

ठकदुदुदुका॥अनाककुकनासर्तदीर्घकककनटा॥अनकथ

वलोमिषरुलात्तामलकी॥विषुजुमगाचवयल्लाचलिमिदुविरुगक ५१

॥जुनकुष॥कषरुलागवासा॥कविदुम॥जुरुयात्तयथापथावय

लादतनामगा॥दविगकीदेमवगीचगकी॥प्रयसांलिका॥पीनदु॥गवलं

॥पगिकाष॥चाथदुमात्तल॥कल्लिकाव॥पविषा॥लकचातिका॥चाउदु॥

पदासा॥कषकिरुला॥जुजुल॥काका॥दमलिका॥रुलुमलपदु

घनरुला॥जुविदु॥सर्वगा॥रुदहिगु॥नियसिमातका॥पिचुमद॥यनि

मधपिच्छिलागुवर्लिगपा। कपिलाहसगशासालिनीमन्त्रकपीनन॥ तलु
लाघयथाश्वयश्वम्यकाहमप्रम्यकभा। उगस्यकलिकागन्धरलीयादध
कलव। यकलावहलालाकसमोकनकदातिमो। चाम्यशः कलवानाग
कलवः काश्च नाहसमजयाजयनीनकीनीनादयीवैजयनिका। गीय

५८

श्रीमन्निमन्त्रः स्यात्कलिकागलिकानिका। उयाथकूटजः कावत्सका
गिनिमलिका। उगस्येवकलि। मन्त्रयवरुदयवैरुल। ककपाकरुलावि
मसूरवत्तः कनमर्दककालकन्दकमालस्यालापि। चाम्यथसिन्दूरः
सिन्दूरानन्दसुविशोनिर्गुलीलातिकल्पपि। वलीरवनागनीदवगाञ्जी

मन्त्रं यथाऽपि दक्षिणां तु रुद्रं तु रौद्रं तु मल्लिका ॥ रूपदीपं गरीव्यं
 सेवास्त्राणावनाहवा ॥ मल्लिका तु सुवहानि लुङ्गीनी लिङ्गा च सा ॥ सिता
 सोऽथ गन्धसा रत्नवन्धुधमाधधी ॥ गलिका यथिका म्वक्षा सा पीता ह मयू
 थिका ॥ अग्निमूकः पूषः कः स्याद्वास्की माधवी लता ॥ सुमना मालनी जानि

५२

॥ सफलानवमालिका ॥ माघी कूर्दं वक्रकम्बु वन्धुका वन्धुजीवकः ॥ सहा क
 मावी कवलिनस्तान् लुमहा सहा ॥ मन्त्रं यथाऽपि दक्षिणां तु रुद्रं तु रौद्रं तु मल्लिका
 कर्मा नीला जिह्वा दद्यात्तदा सा चारुमल्लिका सा ॥ सेवय कम्बु जिह्वा स्या
 रुद्रिन्कुरुवका नृणां पीता कुरुवका जिह्वा गच्छिन्तु वनी दद्यात् ॥ ५३ ॥

पूषं जवापूषं जवापूषं वज्रपूषं मिलित्ययन् पुनिहासं घनपासचछ
गहयमानकाः कनवीककुक्कनग्रन्थिलावृत्तोऽन्तरुः किमवाक्षक
धूलवः कनकाक्षयः मातुला मदनव्यास्यरुलमातुलपूषकः रुल
पनीवीकपूषवृत्तकामातुलरुक् ॥ समीवः समवृत्तकः पूषपूषदलि

लिङ्गक भजनीवा प्रथम पङ्क्ति क शिखर वक्र १० वक्रो ॥ सिंग १ ऊँ का गुणा नी
दुविग का वक्रि संस्कृत भजनी क वक्र का स्वर ग म प वि की व ॥ भ म न द व
॥ अर्क पङ्क्ति गुण १ ल क य ना प हो ॥ लि व म स्त्री पा गु य ग उ का षी ला वृ का
वसु भ वृ न्दा वृ ता द नी वृ त्त नृ हा जी व नी क ल्य पि व स्ता द नी क्ति न नृ हा गु रू ची

गलिका २ मगा जीविका सा मवत्तोविण ल्या मधूप खुपि ॥ मर्वा दवी मधूनसा
मावरा गजनी ध्रुवा ॥ मधुलिका धनू १ प्रली ग कर्तु पीलुप खुपि ॥ पाभम
ष्टा विक कर्तु लिपनी प्रस सीवसा ॥ काली लापा पचली पाची नावन गिकि
का ॥ कट १ कट म्ना १ ॥ काना दिली कट्वा हिणी ॥ मत्स्य पि ल क क क दी चका

५१

मी ग कलादनी ॥ आस गु फा ज अ ध्रुवा पाट पायली म धा पाका १
कलिन्नि १ कपिक कृ ग्य म क टी ॥ चि अप चि ग न्या ग्र धी ड व नी ॥ म नी यषा
॥ प ल्य कृ ली सु न प्रली व गु म पि ल प खुपि ॥ म मा मार्त १ ॥ ले ख लि का ध
मार्त व म स न के ॥ प ल्य क प खुपि की ल प खुपि किलि ही ख व न ऊ नी ॥ रु डि

काशकलीयशातान्तीयाकलयष्टिका। ज्ञानवल्लीयामयत्तकवर्धनवर्द्धका
॥ मञ्जिष्ठाविकसाजिनीसमकालमयिका। मधुकपक्षितुलीनतुलीयाजन
पक्षीयि। यासायवासाइषात्तधनूय्यीस४कृष्णक४नादिनीक४नाशनका
समूहाकाइवालता। एभिपक्षीयथक्पक्षीयिपक्षीयिद्विवल्लिका॥ काइयि

५२

नासिरुपूच्छीकलसिद्धविनिर्मुहाद्विग्निकासृणीवायीवृहतीक
४कारिका। युवादनीकूलीकूडाइषात्तनादिकल्पयि। नीली
कालाक्रीतकिकाग्रमीनामधूयर्तुका। नक्षत्रीणीरुलीउत्तागृही
दावनीतिनी। अवलुज४सामराजीसूवर्तु४सामवल्लिका। काल

म षीकृषूरुलावागुजीयुतियधुवि।कृषूयकृदल्यावेदहीमा
गधीचपलाकला।उषलापिचलीलोमुकालाइथकत्रियचलीक
विचलीकालवलीप्रयसीवलिबःपमान्।वकालुचविककाकविशीगु
आउकृकल।पलकायात्रिकृगन्ध।वदकुलाइकककधगककका

३३

गहवकावनललाटल्यपि।विश्वविषयुक्तिविषापविषावृत्त।लहीमहो
धश्चथकीनावीइन्वि कसमागमकलीवकृत्तासीवृन्दिववीवनीमयप्रका
हलीवृपलीनानायस्यःगीतावनीअहवृवथपीगकृकालयकहनिउवभावाः
धीपन्यसादावृहनिअपर्जनोत्यपि।वचाग्रगन्धवधुकागलासीगमपर्विका।

ॐ क्लृप्ते मयती वेशमादृष्टिं कोउ वासका। वृषाः टनयः सिद्धास्त्रा वासका वाजि
 दन्तकः। भ्रातृनागिनि कर्त्तृणादिभूषाकाः। यवाजिता। नृकगन्धुकाः।
 शः काकिलाकः। नृकनाथपालयः। साक्षीगलिवन्धुशामधूविकानिही। मिम
 याः। यथसीकः। उवजः। त्रुक्त्तुहीगुठा॥ समकः। इमाः। धावत्तुसमायाविण

५५

गङ्गुला। गङ्गुवन्धुमिन्द्राधिकुम्भं पूनपून्सकं॥ बालावाद्यालकायः।
 ववाकुशानयुष्मिका। मृद्धीका। गङ्गुनीजाका। साक्षीमधूवसुतिच॥ त्वर्चनूक
 मिः। सुवहाणियुगाणिवृतापि वृत्। छित्तुवचनीधामापालि। नृकसूषलि
 का॥ कालामहवविदलाईचलाकालमयिका। मधूकः। कीर्तकयष्टिमधूका

मधुयक्षिका। विदानी की वंश कुशगन्धका की चयासिगा। अन्या की वंश
दानी स्यान्महा। यथा र्कगन्धिका। लाहली। भावदीगा यपि प्यली। कूलादनी॥
खना। भावदीगा यथा मयूनाला च सुल्लक। गायी। भावमा। भावविवाद्यादनका ३५
त्यल। भावविवा। यथा गन्धिका। सिद्धिल। भावद्वनया कया। म। कदलीवा
वधचूषान। भावमा। सुमल्लता का कीलाम। नप। कुकु ककमूना सुल्लयपि। वा

लकीहि। गुलीहि। हाह। कीद। यधर्षिणी। नाकली। सुनसावास्ता। सुगन्धगन्ध
नाकली। नकल। काकुज। नाकी। काकी। सुवहाचसा। विदानी। गन्ध। सुमी। भा
लपली। लिवा। कुवा। कुलि। कवी। सुमू। डाका। कपी। सी। वदन। गित्त। लान। दाजी
उसा। वन्या। टी। कुज। सहा। दध। भा। गन्ध। वूकी। नाग। वला। ज। भा। कु। सुग। वधू। का॥

भामार्गवाद्यायक ४ स्यात्सहाजालीस्यीनक ४ धास्त्रीयठालिकाजालीनादया
 रुमिजम्का। धंमार्गवाद्यात्सहाजालिकानिलिखाकाकाजीकाकनासिका। ग
 धावदीउसुवहासुसलीगालमलिका॥ अज ४ नीविषादीयाः ४५ जिहादाधि
 कसम। गाम्बूलवलीगाम्बूलीनागवत्ययथदिजा। हवदीकाकोकीकपीलार

५५

सागन्धिनी। गलवालुकमलयसुगन्धिहविवालुकं। वालुकश्चधयालुकी
 कसूत्रः कसूत्रकसूत्र॥ वालुकीवलवहिष्कादिचक ॥ म्बूनामच॥ कालावृत्ता
 र्यरुद्राधयस्यसीनलिका। निचालेलयमालयकुडुदेत्यागन्धकयमूना
 । गन्धिनीगजराकाउसुवहासुनसीनसा। मरुवत्तकसूत्रकीशलकीकादिनी

नि सा॥ अन्निका लासु रिपु उ धन की धा हृयूषिका॥ यथा का चतु वासे लानि
 कृति ब्रह्म लथ सा॥ अन्ना यकृत्तिका उ ल्बकान्नी छि पूटा अति ॥ व्याधिः
 कृष्णं पा निशायं व्याप्यं पा कल मृत्यु ल॥ राखिनी चो न पृथ्वी सा रू गी न थः
 विउ न्न कषा भाटा ॥ मला अयनाली निवाता मल की निवा ॥ यमो पुनी कं पू

[illegible]

निकाम गालक सुनाइ ऊ। कटन टं दरा पूर्व वानर्य य विवल वी। वृव ग
 पूर्व गानद के वही मूक कानि च। यन्त्रि पट्टु कुं वरुः पूषा हो नय क
 कूने ॥ मन्त्राल उ पिपुता द क्का द वी ल गाल यूरः समुद्र का वधूः काठी व
 मलि (क) पि क ह्य पि। ग य सि नी ज रा सी सी ज टि ला लाम गमि यी। त्व क रः

३८

लकट ह न त्व च क्ष च व न न क ॥ क र्वून का डा विल क ४ फल्य का व ध मर्या
 क थ डा व धा जा नि मा ण स्म न जा गो त र्व मो ष ध । ग का र्था ष ण यू ष्या दि न डू ती
 था ल्य मा नि वि ॥ वि ण ल्या नि नि र्वा न का नै र ति नी ण क यू ष्या पि । त्या द रु ग न्धा
 म ढु ला ष्ठा व नी व डु दान क ४ रु (क) या की रु म ल्या की व य ल्हा हा म य स्त नी ॥ य

इयं श्रीदे मवकी सवर्ग की नीति वगी रुचयुक्ती तुका म्वा जीमा प्रयत्नी मला स
हा ॥ तुलिक नीव करुला विम्वि कापी लूप धपि। वव्व वाक वनी तुनी रयन
पूया जगन्नि का। एला पत्नी तु सुवहा वास्ती यूकन सा च सा। वा। न नी चूकि
का दन ॥ ७८ ॥ सुला लिका। सु सुवधी चू का म्वा च ग स ॥ ७९ ॥ व व्वा वि। न

५२

मस्का नी गलु काली सु मन्ना रय दिनी एयि। जी वती जी वती जी वा जी वानी या
मधू एय सा। कूर्च नी धमि धू कन ॥ ८० ॥ न ऊ ला न जी व का। कि वा गति का रुति म्वा
॥ नार्थ नि का थ स फ ला ॥ वि म ला सा ग ला रु वि रु ता च र्म क ॥ ८१ ॥ एयि। वा य सा
ली स्वा इ न सा व य ॥ ला थ मू क ल क ॥ नि कू कू द नि फ ए य कु ए य इ म व य थ

पि॥ अउ मादा न ग्रग न्म युक्क द हीय मानिका । मूल पूस्क न काभी न प प्रय कालि
 पोक्क व । अया धा नि च ना प प्रा चा व दी प प्र चा विणी ॥ कामिल्य ४ क र्क ११ थ ला
 न का ॥ क्ष वा च ता ल्य पि । पु पु ना उ स्त उ ग जा द रु प्र थ क म र्द क ॥ प प्रा ट उ १०
 न का ॥ थ प ला ५ नु सु क र्क ११ ल ग र्क ५ रु मो ११ द वि र्क ५ म हो व धी ल

उ तं ग अ ना वि र्क म हा क न्द न सान का ॥ पु न र्क वा रु ११ थ घा वि रु न्न स नि प
 रु र्क ॥ स्या दा ग क ४ गी ग ला १ प ना जि ना ग न य रु पि । या वा व ना द्वि १ क र्क ११ पि
 ५५ जा नि घा नी ल ग ॥ या र्क कं गाय मा ११ स्या का य की व ल र्क ५ क ॥ वि र्क ११ क
 न पि या द द्वि र्क ना ही व द नं ल्य पि । मा र्क वा रु र्क ना ज १ स्या का क मा र्ची रु वा य सी ॥

॥ प्रथमलिङ्गजगिच्छुगामध्वनामिति ॥ जवाष्कृष्णीकानवीचसावसादुपसा
 विशी ॥ तस्याकटस्तनाजवलाहउयस्यपि ॥ जनीऊरुकावजनीजहृद
 वजवर्हिनी ॥ संस्यर्धसटीगन्धमलीमनुक्तिफलपि ॥ कर्चूनापि यला ॥ ११
 पिकात्तवत्तः ॥ फणिलक ॥ सुखवीवाधकलकपटलल्लिकक ॥ पद ॥ कृष्ण

उरुमुककीवृनिर्दीवृ ॥ कर्कटलिआ ॥ कृष्णकृ ॥ कटुमीसाहृम्यलाद्व
 हसम ॥ सिंविजगवाती ॥ तत्रम्यावि ॥ लाल्विठवान्दी ॥ जू ॥ म्या ॥ श्वन ॥
 कन्दामेंगलीवमुसमदिला ॥ कलम्युत्यादिका ॥ सु ॥ उमूलकंहिलमा ॥ दिना
 ॥ बाहूकें ॥ कटुदास्यईदीउ ॥ तपर्विका ॥ सहसुवीर्याताग्नयोवृहनका

यसाहिना॥ गमलामीनवीर्यी च गछालीन कलाकक शक्रु विष्णुमयनामा
 मूकामूककमलिया॥ त्याहूडमूककायुद्धाह जलाचकलावटा। वं (गल्लुका
 नक मी वल्लुविसावहृदाधजा॥ गनपद्ययवहृला वं मूकवर्ग जलाशव
 रावः कीचकाहृल्लुथ्यनन्यनित्ताहृमा॥ ग्रन्थिर्नापर्वपद्वीगुल्लुजनक

१२

१॥ वगन उल्लुधमनः पाटगलाधकागमलिया॥ रुद्रगन्धपाटगलः पूसिह
 मिठुवल्लुआभनसावहृकहृदाः पूलुकाकावकादयधत्याहीनदीवीनग
 वं मूलल्लुगीनमलिया॥ मूरुयंतलदं सवममलालं जलागयं। लामऊकं
 लघूलयमवदाहृकापः। नलादयहृल्लुगमूर्द्ध्यामाकपुमूरुवाय

[illegible]

वाकः खपूनास्तु उरुलमूदगमगचहिकालसहिगालुयशखईनः कग
कीगालीखईनीचहृष्टमा॥ ॥ नमिदनीषधिवर्ग॥ ॥ मिह।

मृगलः प्रथमः सूर्यः कः कः वीरविः ॥ मृद्वदीपिनो व्याधुतवः सुमृ
मदनः वनादः ॥ कः वीरविः ॥ कालः ॥ पाणीनिः ॥ किटिः ॥ दंष्ट्रीः ॥ धापीरुः ॥

लामाका अल दान ० लय मि। कपि सु व न सु व ग ल र वा न ग व ली मूखा भ म र्क

टावानन १ की ल म व नो का ^ज ध र लू क ॥ ७८ का क र ल ल ल ल का ग लु क र व न र य १६

दिना। लुला म म हि षा वा रु दि ष र स न से वि ल भं छि लि या नि वा ल वि मा य

ल म मा य म ग क र्क का भ ल ग ल व च क का क र न र न व ज मू का भ ल उ र्धि

अलामा म वा द ष दं १ क ज रा रू उ क ॥ ७ चा लो ध न लो धा न लो ध म लो धा धि

का ल म उ। म वि लु १ ल य ल ल म नि ग ल ली ग ल लं ग लं। वा त य मी र्वा त मृ ग १

का क र्णी ह म लो ध क श म लो ध क न न वा ता य ह वि ल म अ न या न य भ ने ल य म

ल म य मी श म र लो ध म र लो ध म र लो ध म र लो ध म र लो ध म र लो ध म र लो ध म र लो ध म

[illegible]

यकिंलकनिगककलकनदिजाभयतकिप्रसिपदगयतत्यउवथाउजाभनमेका
वाजिविकिनविविक्किनपगुरुयभानाअहवागनमकभैविष्ककामउसंगमाभनवा
विलासाहवातामहुकानलुवहवाभानिलिनिःकुकुलासावाजीवधैःऔशिवचका
वकःकायलिककिटिरकावर्लकावर्लकादयभगनत्यनहृदाःपरुपगुच

मन्त्रब्रह्मस्तीयद्विः पञ्चमूलं च सूक्तं द्विः सति योऽपि जानाति तं उवाच नारायणः
रवमगमिष्ये च यत्नीकायादिहीनं उक्त्वा शानी उवाच सति या पातः पाकाः कृका
तिरुः यत्पुः शवकः लिखुः ॥ श्रीयुक्तेति धनं दन्दयुक्तां तु गलं यगः सम
हनिव हयूरुसं हारुचि सवज्जाः ॥ क्लामाद्यनिकरुणा न वाव संघात संतयाः

१२

संभूदायः समुदयः समवायः यथा गदाः सति यां तु संदति दन्दनिकु नमं कद
मका दन्द हं कः समे द्द्वर्गः संयसा भोऽपि जनुहि ॥ सजानीयेः कलं यथा गिव
प्लाम्बूनयं सका प्लनं समजा यथा सना जाय सधर्मिणिः ॥ व्याविकारः पूजः
वाणी गल्वः कटमलियाम् ॥ का पातः लोकमाय न मेऽपि रादीति न मेऽपि गृह

सकाऽपकिमृगमऽष्टु वास्तुगृहकाचन॥ ॥ ७५ ॥ सिंहादिद्वर्गः ॥ मनु

ध्यामानूषामख्यमिन्नामानवानना॥ ७६ ॥ पूमान् ७७ ॥ जनाऽपूत्रवाऽपूत्रवा

१ नन॥ ७८ ॥ आषिदवलायाधानावीसीमन्किनीवक्षः ७९ ॥ पुनीपदलिनीवामावनि ८०

नामहिलागध॥ ८१ ॥ विलासवस्तुमंलीवूः कामिनीवामलाचना ८२ ॥ पुमदाहाला

विनीकाकाललनाचनिगन्धिनीसुन्दरीनमलीनामाकापतासुवलाविनी ८३ ॥ वनाना

हामरुकासिन्यूरुमावनवलुनी ८४ ॥ कनासिधकामहिषीहानिनात्यानृपस्त्रियभय

लीपाविगृहीतीचादिनीयासहधर्मिणी ८५ ॥ तायाजायाथयूरुनिदावाऽष्टाष्टकद्र

न्धिनी ८६ ॥ पूरुधीसुवन्निगाउत्तगीताधीपमिषुगा ८७ ॥ कनसापलिकाधूराधिविनि

अस्य यं वना। प्रणि वना च वयं च कलकी कलया लिका॥ कथा क्रमानी गोत्री उ
नानिका नागगार्हवा। एतन्मध्यमादृष्टवजाननूदीयवति ११ मं॥ समा ४ सूखा ज
नीवध्वनि विष्ठी उल्लवास्तिनी। ६० क्रावनी कामू कात्यादु वत्यादु वस्यकी उ कामू
की॥ कान्नाथिनी रुयायागिस्तु ६० मं साः हि सा विक्ता। दूयली धर्मिणी नन्ध क

८१

सगी कलटत्यवी। स्वे विष्ठीयां पुला च स्यादस्विष्ठी लिपुना विना॥ जूवी नानिष्ठा
मिसुगा विष्ठा स्ता विषयसम। आली ४ तृती वयस्या च प्रणि वली सारुका। एडा
यवि ली पुला सा ६० पुला ६० धीमती। ६० डी ६० उल्लवा यति च ६० डाम जागि व
वच॥ आरि वी उ महा ६० डी जागि यं याग या ४ समा ३ अर्याली स्वयमर्या स्यात्

क्रिया कृति या अंशे पि ॥ उपाध्याय या ध्या पाध्यायीत्या दवायी दित्यस्तन ॥ अत्राचार्य
 ली तु प्रयाग त्यादयी कृति यी गथा ॥ उपाध्यायान् पाध्यायी पाठाखीयं सल कथा
 ॥ वीवप्रती वीवहायी वीवमाता गुं नै ॥ उवीवस ॥ अत्राचार्य या पुजाता वपुस्तना व
 पुस्तिका ॥ स्त्रीननि काका दवीत्या इमी स ॥ अत्राचार्य विरचित ॥ कात्यायन

८२

ईदृष्ट्या कात्यायन वसनाध्या ॥ सेविस्त्रिय व ॥ अत्राचार्य द ॥ लिल्य काविका ॥ अ
 सिक्कीत्या दृष्ट्या या यथा क ॥ पुनचाविनी ॥ वाक्सी गलिका व ॥ अत्राचार्य जीवाथसाज
 ने ॥ सल्लगावा नमस्या त्या स्फुटनी स्फुली स ॥ अत्राचार्य कात्यायनी कलिका देव स्नाथ
 ॥ अत्राचार्य जसना ॥ अत्राचार्य मिस्त्रवी ना ॥ श्रीमलिनी पूषा व ॥ अत्राचार्य पुनचाविनी

स्यदजः पूष्यमार्कं वं। प्रहाल्लुर्दादिवनी निष्कलाविगमार्कं वा। आपन्नसत्त्वासा
हुर्विद्युत्तवन्ती च गहिरी। गलिकादमुगालिष्कं गहिरीं चो वदं तं ग। पापूतर्ह
दिधिष्टनूटादिलुस्यादिभिः ४ पतिः ४ सुदुदिकाः। ग्रदिभिः ४ से वयस्य कूदमिनी॥ ८३
कानीतः कन्यकाशानः सुगाथसूतगसूतगः सोहागितयः स्यात्प्रावले। यमुयन

क्रियाभये न ससयः स्यात्ते ह सजीयन्थपिरुससूतगामाहसूत्वे वं वेमाह
याविमाह उभयप्रथवान्धकिनेयस्याद्वचूलयसूतगः कोलटयः कोलटवाति
शकी उरगीयदि॥ नदाकोलटिनयास्याः कोलटया पिचात्मजः आत्मजकनय
४ सुनूः सुनः पूजः क्रियस्यमी। आरुईहिन वं सुवपत्यमकं नयाः सुम। सुजाग

खोनसो वखो ता गस्तु जनकः पिता जननी पीयूष माता जननी रुग्णिनी स्तसा नना
 दाउस्य सायत्यर्न डीयो जीसगात्मजा रायलि ता रुवर्न स्याता नवः ॥ ५५ ॥ पत्र स्यर्न ए
 जावनी शरु जाया माउलानी उमाउली ॥ पनियत्या ॥ पुस्तः ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ उवस्तु पि
 ता गथाः ॥ पि रुग्णाता पि रुग्णः ॥ स्यान्माउरुजा ता उमाउल ॥ ग्धात्ता ॥ स्यर्न गवः ॥ पत्याः ॥

२५

स्त्रामिनाद रुदव बो ॥ स्वमीया रुग्णिनी यः ॥ स्यान्माता इहि ई ॥ ५९ ॥ ६० ॥ पिता मरुः ॥ पि
 रुग्णिना गत्यि ता य पिता मरुः ॥ माउरु माता मरु य व स पि उस्तु रुना रु य ॥ समानाद
 र्यः ॥ माद र्यः स ग र्यः स रुजाः ॥ समाः ॥ स ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ निवन्धु स्य रुजनाः ॥ समाः ॥ ६४
 रु य वन्धु गाग घाक माहा व स रुद रुया ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ पिता रुग्णिनी जावस्तु पपनिः ॥ स

मो ॥ अमृगं जावजः कृष्णं अमृगं हर्षं विष्णुं लक्ष्मिं ॥ अजीया हा हा जा हा हा निमो अ
 गवा दू हो माता पिता बो पिता बो माता व पिता बो च तो ग जनयिणी ॥ अमृगं अमृगं बो अमृगं
 बो पूरा पूरा अमृगं इति गा च । अमृगं नीद अमृगं नी जा या य नी च तो ॥ ग क्रीडा या ज नायू ॥ अमृगं
 लं च कलला ॥ क्रिया म । लुगि मा सा वे अ न ना ग कृष्णं ॥ मो ह मो ॥ ह नी या पु कृति ॥

६५

अमृगः श्री वं प ॥ अ न पं स कं । नि मु स्तं लो हा वं वाल्यं ता नृ ल्पं शो व नं सु म ॥ अमृगं
 वि ब लु वृ द्ध लं वृ द्ध संध यि वार्द्ध कं । प वि गं ज व सा लो ल्पं क र्ण दो वि गं सा ज वा ॥ अमृगं
 इ लो न ग या ठि क्का कृ न या च कृ नं ध या । बाल लु ल्पं मा न व का य य लु लु नृ ॥ अमृगं
 यू वा ॥ पु व या ॥ लु वि वा वृ द्ध जी न जा ॥ अमृगं ज व न पि । व र्षी या नृ द र्ण मी श्रा या नृ य

वैजल्यप्रियाग्रहः॥ जयन्त्यञ्जल्यः॥ कनिष्ठरावीयावनजानूजाः॥ जूमांसाइध
वन्नागावलवान्मांसांलांलः॥ तुन्दिलमुन्दिकमुन्दीट्टदत्तकिः॥ विचिल्लिलः॥
जयटीगावनाट्टयविरुमानननासिक्काः॥ केवः॥ कलिकः॥ कणावलिनावलिराः॥ स
मी॥ विकलाङ्गमुयागलुः॥ खच्चजिस्वध्यामनः॥ खवत्तः॥ ख्यालववत्तः॥ विग्रु

गंगनालिकः खूनदाः खालूनदासः पः ४५ गंगजानूकः ४६ उर्ध्वमूर्ध्वजानूः खालू
 लः ४७ संदगजानूकः ४८ खालू वधिवः ४९ कः ५० गङ्गलः ५१ कः ५२ वः ५३ पः ५४ नः ५५ लः ५६ ग
 नोः ५७ धः ५८ पः ५९ नोः ६० मूः ६१ मूः ६२ मूः ६३ मूः ६४ वः ६५ लः ६६ कः ६७ कः ६८ वः ६९ खः ७० खः ७१ अः ७२ अः ७३ मूः ७४ नाः ७५ वः ७६ नाः ७७ जः ७८ दूः
 लः ७९ कः ८० लः ८१ कः ८२ कः ८३ लः ८४ कः ८५ लः ८६ कः ८७ लः ८८ कः ८९ लः ९० कः ९१ लः ९२ कः ९३ लः ९४ कः ९५ लः ९६ कः ९७ लः ९८ कः ९९ लः १०० कः

क्रिया॥ ह्रस्व उच्चैः स्रज्ज्वायगदाजायुनित्यपि। स्त्री वृद्धाश्चायनाय वागव्याधि
गदामयाशकयः॥ ८॥ मध्ययकाचयुनित्यायमुपीनसः। स्त्री श्लोकगदवः पूरिका
सल्लुखवधूः पूमान्॥ ९॥ ह्रस्वयधूः॥ १०॥ पादह्राद्याविषादिका॥ किलासंति
५१
मकच्छीउयामयामाविचर्चिका। मकच्छीउयामाविचर्चिका॥ ११॥ विटकलिषाव

१२॥ क्रियामीर्ममत्रः। स्त्री वनाजीवः॥ पूमान्। का॥ ममलककृष्टविशुद्धिनि
का॥ मी॥ म्रानाह्रस्ववधूः। ह्रस्वयधूः। कृष्णवहिका। पुच्छदिकावमिष्यन्ती पूमा
मुवमथः॥ समा॥ व्याविहृदविडधिः। स्त्री कलमहर्गदना॥ १३॥ मीम्रु कृच्छ्र
ल्लवृत्तुकावधूः। मीम्रु। वागदारागदकावाविष्ये। व्याविहृदक॥ वाकीनिनामयः॥

कल्य उल्लाधनिर्गता गदा ॥ लानल्लाह्म मयायी विरुगाया धिगा पद्र ॥ अउ
बार एगिताया कः समो पासन कक्को । दुरुल्ला दुरुवागी स्यादल्ला बाग यूमा गति ॥
वान काया गवागी स्यात्ता गिता बाः गिता वकी ॥ स्युः किन्ना क वूल चिल्ल पिल्ला ॥ कि
नेः कि चायसी ॥ उन्नरु उन्नाद वनिः लल्ल वल्ल ॥ लल्ल वल्ल ॥ करी न्यू ऊः उन्नरु जायुदु

नाहोउलुलुलुलुलो। किलासीहिअला। आ। इ। दू। कृ। ता। म। र्ण। म। कृ। मो। ए। उ। कं। न। जा।
 यतसीयवीजवीर्यलियालिव॥ मायूः पिरुं करुः। लुषा। क्रिया। तुर्गै। ले। सु। म्भरा। पिसि।
 गल्ले। मा। सं। यल। लं। क। य। मा। मि। र्ण। उ। रु। फं। पु। क्क। मा। न्हा। रु। द्द। ल्ल। लं। शिलि। न्। कं। वृ। धि। कं।
 इ। लु। ल्हा। हि। ता। सु। व। क। क। ग। ज। ल। लि। र्ण। वृ। क्का। ग्र। मा। सं। द्द। द। यं। द्द। न्। द। रु। य। पा। व। सा॥ प। ध्वा। डी।

वाहिवामन्यानाडीरुधमनिःलिना। निलकंक्षाममलिच्छं। अर्द्धकिट्टमलाइमि
याम्। ज्ञनंयूनीर्गुल्ममुप्रीहायस्यथवत्तसीत्तायू॥ ४॥ मियां काल
यद्युयकृतीगुभमं॥ म। मृतिंकास्यनिनालात्ताइविकानउथाम्
लं॥ नृपुसावउआवावत्तुकोमलंकृत्॥ यनीषगृथवच्चक्रमकुविष्ठावः

५२

धोमियो॥ म्यात्तुप्यनःकपालस्थितीकः। कल्यमलिच। म्यात्तुनीनालिक्कीकालः
पृष्ठात्तिउक। गवका॥ लिनात्तिनिकवाटिः। स्त्रीपात्तुत्तिनिउपयुक्त। अंगुली
काइवयवाः। पद्यनाथकलवर्न॥ गगुवपूः। सदननलनीववर्षाविग्रहः। कायाद
दः। स्त्रीवपूसाः। मियात्तुत्तिनूत्तुत्तु॥ यादाग्र्यपदयादः। पदद्वि। यव। म्यात्तु

याम्॥ गङ्गा की घटि कउ होय मातया किं न धरु या ॥ जं घउ यहु गजाननू पदीया
वदलि या सकि स्त्री व पूमानु रसु सुधि ॥ पूसिय न गं ॥ उ दं त्य पानं पायूनी वलिनी
रव धा दया ॥ क गता ॥ लिहल क कटि ॥ प्रवि ॥ क कलमि ॥ प ॥ अत्रि गम ॥ स्त्री २०
कया ॥ स्त्री वउ ज घन पूव ॥ रूप कोउ निगम ॥ स्त्री दय ही न क कन्द ॥ ॥ लि या स्त्री चो

कटि या धा वय स्त्री वरु मान या ॥ गंग या नि दया ॥ लि ॥ म म डाम हों डाम हन ॥ गद
मी ॥ मू का उ का घा व ल ॥ ४ ॥ वं ॥ ध न रु क वि चि लु क की ज ० वा द व लु न सु नो
कू चो ॥ वृ वृ क रु क व गं स्त्री न त का उं उ जा ग न ॥ उ वा व लु च व क ॥ वृ वृ उ च
व म क ता ॥ स्त्री ॥ उ ज लि वा ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥ स्त्री ॥

त्वमस्मीत्येवधधमध्वमं चावलनश्च मध्वमस्मीत्येव
 दाः स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात्
 न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं
 स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात्
 न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं

२१

कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात्
 न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं
 स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात्
 न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं
 स्यात्कदाचित् कुर्यात् न भवति विपुलं स्यात्कदाचित् कुर्यात्

बलिमुनिर्कनिष्ठनमूखिना॥ व्यासावाक्कासकनयास्तुतयाहिर्यगन्तवः॥ उद्धृति

सुगन्दाः॥ पालिन्मानयोवृषंरुषू॥ कल्मसगलाथग्रीवायांलिवाधिः॥ कन्धवत्यपि

॥ कम्बूरावागिलेखातावद्दधीदकगटिका॥ वक्त्रास्थवदन्तुलुमाननलपनमूः २२

रवीक्षीवद्युधगंधवहाद्यानामवनालिका॥ आकाधनोउवदनम्बुदोदगनया

समी॥ अर्धः॥ स्याच्चिक्रकंगलेकपालेगन्तवाहन॥ वदनादगतादकावदास्ता

लूउकाकृदं॥ नसहानसनाजिह्वापाकावाहस्यहृक्कवी॥ ललाटमलिकं॥

धिरुद्धदग्धाकृवोलियो॥ कूर्चमसीकृवास्मधगावकाकू॥ कनीतिका॥ लावनेन

यननगुमाकटीचक्रवर्तिनी॥ दृष्ट्वावाप्रतजाम्बूवादन्तंवासुमस्रव॥ अर्धा

गोमयानकोकगकापाद्दर्शन। कर्तुं गद्यग्रहोत्पन्नं ग्रन्थं ॥ श्रीगुवर्ण
 यथउत्तमगंगलिनः ॥ गीर्षमूर्धनामस्तुकाश्चिदाचिक्रवः ॥ कनलावालः ॥ कचः
 कर्णः ॥ लिनात्रुष्टमद्वयैलि कर्कशमलकायुक्तं कनलाभमस्तुलाष्टम
 लकाः ॥ काकपत्रः ॥ लिखतुकभकवनीकः ॥ वल्गुधधामित् ॥ संयगाः ॥ कचाः ॥

२३

लिखात्तुताकगपाः ॥ वनीनस्तु सदाजय। वलिः ॥ पुवलीगीर्षमलिनस्येविलदक
 च। पाणायकस्य रुक्मस्य कलापार्थः ॥ कचात्यन। गन्तवहंमसलामगद्वोत्पन्न
 पूम्पूय। आकल्यवधो नयधूपनिकमपसाहनं ॥ दलनं लिखलं कलालकलि
 कृष्यमनुनः ॥ पुसाधिनालं कनस्य रुक्मिणस्य पविकन ॥ विशाङ्गुशजिम्बुनाविम्बु

नैवासंखलवसनमंगुलं॥सूचलक॥यथास्त्रीत्यादनालि॥लूलमठकथनि
 चाल॥पुच्छदपद॥समोवत्सककमलौ॥अकनोयापसंयानयविधानान्यः
 (अ)लुक॥दोषायावालासंगेसमोवृहतिकानध॥संयानमूलवीयचक्रवा
 ल॥कूप्यसिक॥सिंयाभनी॥न॥स्यात्यावव॥दिमानिलनियान॥॥अर्धनू

२६

कंठवस्त्रीणीत्याच्चलनकमंगुलं॥स्यालिषापुपदीनंत्याप्रात्यापुपदंदि
 य॥अस्त्रीविमानमूलायादद्यार्धवकुव॥नियुक्तितीवाजवनिकास्यालिः
 तौवक्त्रदीवसा॥यविकुर्मगिहंस्त्राव॥स्यान्नादिमार्जिनीमृजा॥उद्वर्तना
 क्कानंदसमआज्ञावआश्रवः॥तानंचवृत्तुचर्चिकंस्त्राकाथपुवाधनीः॥

अनुवाधः परुलखापकुण्डलिविमसम। तमालपत्रमिलकचिउकालि
विणवर्क॥ देतीयश्चतुवीयश्चनलुयामथ कंकर्म। काष्ठीवज्रान्नामिनि
खवववालीकपीगनी। नकुसुकाचपिउतधीवलाहिगचन्दन॥ लाकावाः
काजकुलीवेयावाः लकाऊमाणयधलवर्गदवकुण्डमणीसंज्ञामथजाय

२१

कौकालीयकंचकालानुसार्यश्चसप्तमर्थक॥ वलिकागुनूनाजदुलारु
किमिजजानक॥ कालागुर्वगुनूस्मारुनमस्त्यामल्लिगन्धियग्। यदध्वपः
सूर्यवसाः नालसर्ववसावपि॥ यदुनूपायथदकध्वपकलिमध्वपकोः
नूकः पिउकः सिद्धापावनायथपायसः। गीवासादकध्वपापिणीविष्ण

बलउषो। मृगनाहिर्मृगमदः कलूनीचाथकालकं॥ कलूनीचाथकालकं काषः
रुलमथकलूनीचाथकालकं॥ कलूनीचाथकालकं काषः
मन्थसावामलयाजा रुदणीचन्दनाक्रिया। मेलपल्लिकामणीषहविचन्द
नमक्रिया॥ मेलपल्लिकामणीषहविचन्द
नमक्रिया॥ मेलपल्लिकामणीषहविचन्द

॥ यजमाना रुद्रसमं ॥ कपर्दिना गुनकमुनीककाले यज्ञकर्ममाधमशान्
 लेपनीवलिर्धर्तुर्कस्यादिलयनं ॥ दध्निनिवासयागः स्य श्रुतिर्गवाहिर्ग
 विष्णुः संस्कारागन्धमाल्याद्यैर्यस्या रुद्रविवाहनं ॥ माल्यं मालासुजो मूर्द्धिक
 ॥ मालादुगर्हक ॥ पशुद्वयं निखालमिदं वृषान्यसंललामकं ॥ पालममृश

लम्बित्वात् ८४ द्रो क क क उ त ग् । य हिर्य क्ति फ मू व हिलिखा स्या पी उ ८५
 प्र मो ॥ व च ना स्या स्य विस्य त् ज्ञा हा ग ८६ प वि द् उ ता । उ प ध्वा न रूप व ह ८७ य
 यी ल य नी य व ग् । य य न म च्च प र्थ क प स्य क्ता ८८ व द्वा स मा ॥ स मू र्ज क ८९ य मि
 ९० प ग रु ह ॥ ल न्द्र क ९१ क न्द्र का दी प ९२ पु दी प ९३ पी ९४ मा स न ॥ पु सा ध नी र्क क मि

२२

प्र द्वा त ९५ प ट वा स क ९६ द र्प ९७ म कू ना द लो य ज न गाल वृ क क ॥ ॥
 ९८ मि म नू ध्य व र्ज ॥ ॥ स क मि ९९ न रि ज न न कू ला न्य हि ज न न्व यो । व १००
 न्वा य १०१ स काना व र्ज १०२ सूर्य क्रि १०३ द य ॥ ना ज वी जी ना ज व १०४ वी ष रु क
 ल स र व १०५ म रु कू ल कू ली ना र्थ स र्थ स र्ज न सा ध व ॥ १०६ क र नी गृ ही वा न प

कृत्तिशुत्युदयः। आग्रमाः कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया

100

पाश्चात्याः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया
कृत्तिशुत्युदयः। नमस्तुभ्यं वदामः॥ विप्रः प्रया

लघ्वानुरूः समावर्तः सत्यात्वरिषद्वर्गः। अत्रात्क वासिनो लिख्यते याः ॥
 यमकार्यकाः ॥ १८ ॥ कथं च तत्रानामिथः ॥ सुवक्त्राविद्यः ॥ सुनीधरित्वे कथुन
 वः चिनवाननिमनिचिन् ॥ पावम्य श्रियदस्या दे निश्च निरुद्ययं उयज्ञाज्ञान
 मा श्रम्याग्नज्ञात्वावम् उयक्रमश्च ॥ सुवाधवायागः ॥ सुफगलुमीर्यः ॥ कुटु

१०१

सुवसाञ्जयमिन् सुखासुदृगः। सुखीसाकदीतस्यादन्वाधनूवों वर्तते ॥ यथाः
 सुवर्तुः ॥ पुलिधिवपस्यीधनः ॥ स्यात् ॥ चान्ध्वरुपूत्रयव्याफः ॥ पुष्ययिगलि
 वः। साम्बत्तनाशानिचिकादेव रूग्णगदाकावयि ॥ समो हू र्दिक मोक्त रुज्ञानि
 वारुनिक काञ्चुपि। नातिकारुणि सिञ्जकः ॥ सुशुभहयगासमो ॥ सिपिक वाक्त्र

790

कयलीस १ पुता वाताहमकु जाभाकय १ कानं च दृष्टि स्थिति वाग्नं तीगिच दि
ना १ सपुताय १ पुता वाथय रुज १ काषद लु जं १ रुदाज द लु १ सा नदा नमि लु
पाय च द लु रु यं १ साह संकु दमा द लु १ सा न सा न्च म १ स मो ॥ रुदा म जा सा पू य
धा ध मा धो र्थे नी रु रं १ प रु दि व्व म उ १ की ला य रु नी य घ १ ग स च न धा वि वि

कविजनकमर्निः। लाकारुधनरुशिवरु। अपीलुवालि। कनरुह्यंगरुवलिषू
 ॥ समीविषुंरुविष्यसोर्षुषु। अयंरुयंरुवितागु। अरुषुयकल्यामुदगान
 पंमंजसुं॥ युकमोप्रयिकंरुलरुंरुजमानाहितीगवगु। न्याय्यरुलिषूषु
 पुधनरुसुसमथनं॥ अरुवादरुनिर्दंरुनिदलः॥ अरुतनंरुनशलिदिह

१११

चरुंरुगुमरुयादाधनरुसुमिशा। अरुगुयनाधनरुमुल्यममरुद्वानवन्ध
 नं। दिपायंदिगु। अरुद। अरुगुधयः॥ कवायति॥ अरुद। दिदयंरुलुकाकुपा
 रगुलुयवधनं। उपायनमूयममूयद्वानरुलुधनपदाशायोगकादिगुय
 दयसुकायाननंरुचगु। गलुलुगुदालंरुपूरुनः॥ कालुअयमिशासा

दृष्टिर्कं दलं सय उदकं दलं मूलं न। अदृष्टं वदति नायादि दृष्टं सपव चक्रं
 मही उजामरितं सपव चक्रं सय॥ यक्रियात्तु धिक्कावः १ स्याच्चा मननुपकी
 लुक्कं नपासनं यरुह जासनं सिंहसनं यनत्। हेमचन्द्रं स्यात्तु पणं नास्तु
 नपलम्बनम्॥ राउ कम् ४ दलुक्कम् ४ गमनः ४ कनकालुगा॥ निवर्णानि वि

112

न्दुजालकं॥ यक्र सागः १ पाथ सागः १ दक सागः १ यप्रगः १॥ दोषवर्षपथि ऊँघा
 दिदलो गगनवक्कमाग॥ गलुक्कं यक्र मालानमन्तु सप्तपण्डुल। अन्तु
 कानिगलात्तु स्यादं कृष्णसुति लिङ्गया१। यक्र कतावन सायात्तु स्यनासर्क
 नासम। यक्र सप्तवर्षात्तु ४ यनिष्कामः ४ कृष्णदया ४ यीगं स्यात्तु वरुस्यथ

वाजिवाहर्द्विगन्धर्वहृत्तसेधवसुधयशाः आजानथाः कूलीनास्युदिनीनाः सा
 ध्रुवाहिनः यानासूजाः पानगीकाः काम्याजावाहिका रुयाभास्यपूनः ॥ ११४ ॥
 धीयाजवमुजवाधिकः शयः स्त्रीवाहिनः नकावः ॥ ११५ ॥ वाधनधस्ययशका
 लः किं ॥ ११६ ॥ वाधनधवतवावतवंगली ॥ ११७ ॥ विष्वाधनपदः ॥ ११८ ॥ नदिननेक

नगम्यमः कथं तु मध्यममनाहवाङ्माचनिस्वतः ॥ ११९ ॥ निगलमुगलादः ॥ १२० ॥
 नद्वध्वीयमाधवन् ॥ १२१ ॥ आरुन्दिमः ॥ १२२ ॥ धीविगकवचिर्गदलिगमं हनं ॥ १२३ ॥ गगयाम्
 ॥ १२४ ॥ पञ्चधनाधायुः पाथमक्रिया ॥ १२५ ॥ कविकातुरवलीलास्त्रीगदस्त्रीवस्त्रवः प्र
 मानः ॥ १२६ ॥ प्रच्छास्त्रीलमलं गलं वारुहृत्तुवातधिशलिद्वयावरुलधिनीपवृष्टि

मूकुरुवि। यान चक्रिलियकाथगागा ॥ स्यनानवथ ॥ अतोपुष्पनधचक्रया
नसमनाययगा। कलीवध ॥ पवहलदयनचसमलुय ॥ क्लीवन ॥ गकटा
क्रीत्याग ॥ लीकमलिकाकक। लिविकायायानस्यादालापुखादिकाहिया
उतोउदेयवेयाखोदीपिचमवृगन। ध। पापुकमलसंदीग ॥ स्यनन ॥ पान्दक

११ ५

मवी ॥ नथकामलकोंवालाशा ॥ कमललादिहिवारुम। लिषुदेयादयनथा
वथकशावधवऊ ॥ ध्रु ॥ क्लीक्रीवयानमूर्यत्याउपाहमप्रस्तन ॥ चऊनध
गकस्यानमि ॥ क्रीत्यालुधि ॥ प्रमान ॥ पिलिकानाहिवशागकीलकउदया
वलि ॥ वधगुकिर्वन ॥ धानाकावलसुयुगधन ॥ अनूककधादार्धध ॥ हंजा

सैः क्षातायुगधूगशसर्वस्यादाहृतं यानयुगं पश्य चक्षुःवर्णं पश्य पनावाह
 नं यस्तु देवीकवकमस्तिया। आध्वनः हस्तिपकादस्यावाहतिषादिनमति
 यकथाजिमायकास्तु गः कलाचसावधिः। स्वयं दक्षिणं स्त्रीवर्णं रथावथ
 कद्वयिनः। वधिनः। स्यन्दनावाह आध्वनः हस्तु सादिनः। हययाध्वययाहा

११५

नः। सनावकस्तु सैनिकाः। सनायां समथलायसेन्यासैनिकाश्च। वलिनायस
 हजाः। सुरुषिराः। पवित्रिस्तुः। पवित्रयः। सनावीर्वाहिनीपतिः। कचकावान
 वाल्मीकीयस्तु मध्यस्तु कचकाः। वध्रकिगस्तानसुनमधिकाः। नथनीर्षकीणी
 र्षयस्तानि वस्तुधनं वर्मदशनी॥ उनैः। दक्षिणः। कटकाः। उगवः। कव

श्रीमद्भगवद्गीता
 अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवा
 दः ॥ १ ॥

विलिखः कनयं खवत् । ऊपनाद्व पृथक् सोल आद्य श्रुता यक ॥ धन्यो ध
नूष्मा नूष्मा निषंग्य लो धनू द्विन ॥ स्यात्काठु वास्तु काठु न ॥ किं क ॥ कि
ह निक ॥ याद्वी कपा नय धि को यस्मि प न गु ह निको । ने लो लिका सि ह नि ॥ स्या
त्सो पासिक को निको ॥ चम्पा र ल कपालि ॥ स्यात्पना की वे उ य निक ॥ अनू

सुवेः सहाय्यवृत्तवाहिनः सनाभयमाग्रासुवेयुष्मागः सनयूवः
 सुनाः पूनागमः पूनाममीमलुगमीउमलुवः॥ जंघालं निजवस्तुत्या जंघा
 कानिकजाधिको। नवस्त्रीस्त्रविना वगीयुद्धवीजवताजवभजय्यायः गच्छत
 ऊरुजं गय्यामायका जे मलु कें ऊनायागच्छलं विदिवतः पुनि॥ सायनिशा

114

लमणीयाः सुल्लमिणीगः लपि। उऊस्त्रलः ल्यादऊस्त्रीयउऊगयानिगभस्या
 इवस्त्रान्वहिलावधिकानधिनावधिः काममाम्यनूकामीनाकलकीनस्तथा
 ॥॥ पूवावीवस्त्रविकाकाऊगाजिस्त्रयजिस्त्रेवभसीयूनीनाव। रासाधूः म
 लीजीयादयस्त्रिय॥ क्षतिनीवाहिनी सनायगनाविकिती चमः॥ वदूधिनी

वलं से चं चक्र शरीर मलिन्या ॥ ब्रह्म वल विद्या सा एवा दत्ता दया युधि
 भय त्यासा वायु दया मिः से न्यय ॥ पवित्रं ॥ क रं क व था य प लि ॥ प ॥
 य दानि का ॥ य लो गे मि यु ले ॥ स वे ॥ कु मा दा र्था य ॥ धा रु न ॥ सु ना मू र्ख गु ल
 ग लो वा हि नी य ॥ ना च म् ॥ अ नी कि नी द ॥ नी कि ॥ न्या को हि ध ध स म्प वि स

११२

म्प लि ॥ श्री ध ल श्री ध वि य त्या वि य दा य दो ॥ आ य धं उ प ह व र्ण ग म्प म्प
 म ॥ धा मि यो ॥ ध नू ॥ ध यो ध न्च ॥ वा स न का द लु का र्म क ॥ ॥ ॥ वा सा य थ क ॥
 स काल ए ॥ न ना नी ॥ क पि ध उ स ग म्प ॥ व म्प ॥ को यू त प र स क ॥ का टि
 न स्या ट नी ग म्प ॥ ल ॥ धा त वा न लि ॥ ॥ ल क क म्प ध नू र्म ॥ ध मो वी धा मि

जिनीगुल १॥ ह्या लु ह्याली रुमा सा र मि ह्यादि ह्या नय चरक म ॥ लें दं ल कौ
 तवयं च सवा ह्या तउपास न ॥ पृथक् वा द विनिखा ऊजि क्रम व म ॥ ३
 म ॥ का स म मार्ग द ॥ स वा ॥ प कु वा प रू यू र्द या ॥ पु रू उ ना मु ना वा चा ॥ ४
 का वा ड लि छ रु व ॥ नि न रु १ पु हि न वा ॥ वि वा कू विं गू लि फ को ॥ रु ॥ ५
 दि

१२०

उपास न रु दी न निष क ॥ रू वू वि र्द या ॥ रु ॥ ५ ॥ रू वू रू उ नि लि ॥ च रु हा सा मि
 वि रू यं ॥ को रू यं का उ ला ग ॥ क व वा ल १ रु पा द व ग ॥ स व रू रू दि मू रू रू
 म रू व ला न नि व न्ध न ॥ रु ल का रु रु ल च र्म स ॥ हा मू रू व रू य ॥ रु य
 ॥ मू रू ल द नो रू दि ली क व पा लि का ॥ हि दि या ल १ रु ग मू रू य वि द्या ग

नशदयाः कथनः पनः सुः सधिमिध्वपनः यधशास्याच्छुकी वासिपूगीच
 क्विका वासिधनूका ॥ वायुसिगल्यं कर्त्तुं वलागामना लिवा ॥ यास
 सुकृन्कालां कुलियः ॥ पाल्यधिकानयः सधरिहावः ॥ सधोद्यः ॥ सधसन्
 दनार्थक ॥ लाहाहिहाकुहनां वाज्ञानी वाजना विधिः ॥ यत्स नमाहिगमनम

नो नदतिषेदन ॥ या गवर्कं द्वाति नि या लयस्मानं गमनं गम ॥ ह्यादासान
सप्तमीयचक्रं चलिगाथकं ॥ गुरुनिगात्युत्परीतस्यनल्लयानमहिक्रम ॥
वेगालिकावाधकनायकियाद्यष्टिकाधात्यूर्गमधामुमधूकावदिनम्
तिया ० का १ सं सफ कालुसम यात्संशमादनिवारुनधवं ददया १ छिया क्षति

१ यां गुर्वा न दद्याव ज ४१ दृष्ट ४ का द ४ समुत्पि ॥ अ लो ह समा कृत ॥ पना का
 वे ज यनी स्यात्क ग न ध ज म क्रिया ॥ सा यी ना गं स न यू द ह मि यी मि ह य प
 दा ॥ अ ह द र्व म ह द र्व मि त्प ह द र्व का क्रिया ॥ अ ह प नू षि का द र्पा घा त्मा
 त्से रा व ना त्म नि ॥ अ ह म ह मि का तु स्या द ह का व प न स्य न ॥ उ वि षी न १ स ह

१२३

द ल लो यी वि स्मा म पु षा त र कि १ प ना क म पा लो वि क म स्त मि णी कि ता ॥
 वी व पा ने तु य त्या न द ह र वि नि वा न द ॥ यू द मा था ध नं ऊ न्य पु ध नं पु वि दा
 व णी ॥ मृ ध मा स्त न द नं स र्वा स मा म्ना ना यि क अ क्रि यी स ना नी क न द १ क न द
 वि ग्र हो ॥ सं पु हा वा हि सं या न क लि सं ह ॥ ट सं यू ग ४ अ ह्या म र्द स मा घा त सं

ग्रामाद्यागमादवा॥ समूहाय॥ लिख्यं सयत्नमिच्छाजिह्वध॥ नियुद्धं वा
 द्युद्धं द्युद्धं तु मूलं नदासंकुल॥ ऊजुहिहनाद॥ स्यात्काविह्यघटना
 घटा॥ कन्दनं याधसंकुल॥ ऊजुहिहनाद॥ स्यात्काविह्यघटनाघटा॥ क
 न्दनं याधसंनयायद्विगं कविगर्जिनं॥ पितृवाधनूष॥ स्यात्न॥ घटहा॥ मन्त्रो

123

समो॥ प्रसक्तुयलात्कानाह॥ थस्वित्तिगंठले॥ ऊजुन्यां स्त्रीवमूल्यागउ
 पसर्ग॥ समं शुभं॥ मन्त्रादुक्तं मलं माहाध्वमर्दपीठनं॥ ऊजुवर्तं दर्नत्य
 स्यात्सादनविजयाजय॥ येन लुद्धि॥ पुनीकावायेन नियोगिनं चत्ता॥ प्रडावा
 दावसंदावसंदावविउदाव॥ ऊपकुमायमानं चव॥ लहंग॥ पनाजय॥

पनाजिगयनाहमोशिषूनष्टमिनादिमो।यमापयनिवदुतेनिकानवाविष्ण
वली॥पुवासनंयवासनंनिरुदननिदिष्टनं।निर्वसितंनिर्वपयनिर्गच्छ
तमयासनं॥निरुदयनिदिष्टनंनरुदयनयनिवर्जितं॥निर्वापनंविस्तार
नमानवपुमिद्यागनं।उद्वासनंयमथनकथनाक्रासनानिच॥अलम्

१२४

पिञ्जविश्वनाथागामन्कवधायि।स्यार्थवगाकालधर्मादिष्टान्कल्पना
स्यच॥अनाना॥दशानृत्तमनिर्वापनाक्रियाम्॥पनासुप्राकयंचल
पवगसंलिगा॥मृगयमोशिषुन।विद्याविनिर्गच्छियाम्।कवः॥अमुकि
यायूकमन्त्रद्वयवर्तव्यं॥अनानस्यार्वयनकृत्वापरावमक्रिया।

प्रग्रहापग्रहो वै धीकावास्यादन्धनालश ॥ पुनिरुन्मसवयासात्येव जीवा
 सुधनवर्णाज्जायुजीविनकासाताजीवाहुर्जीविनोवध ॥ ॥ नित्यसि
 यवर्गः ॥ ॥ उनयाउनुजाज्जायुवैः ॥ अरुमिष्टाविष्टा ॥ आजीवाजी
 विकायालीवृष्टिर्नजीवन ॥ म्रियीकषिः ॥ पादुपाल्यवालिकं नमिष्ट

१२५

लयः ॥ सुवात्यवृष्टिर्नजीवनमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥
 न्वनामृता ॥ सुवात्यवृष्टिर्नजीवनमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥
 सुकलीदवृष्टिर्नजीवनमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥
 मरुमिष्टा ॥ सुवात्यवृष्टिर्नजीवनमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥ अरुमिष्टा ॥

[illegible]

स्मिन्। द्विगु ॥ कर्म ॥ सुसर्वसत्त्वाकर्ममयी ह्य॥ दाया रकादिवायाक्षो लिकाट-
किकादयः ॥ खानीवायन्तु खानीकउ रु मष्टदि सस्त्रियू ॥ पुनर्पुसकयाव
य० क दान० कर्ममस्तु ॥ के दान कस्यात्के दार्थ्य कर्म म॥ लाक्षानिल
स्व० य० सिक। टि। ल। लक्ष्म दन ॥ पु। जननादनं मार्गं खनिगमवदानं ॥

दाग लपिग माव (ॐ) धाया र्था कृष्ण हल । निनीष कृटक शल ४ कषिका
 ला मल ॥ (म) दाव री च ही वल्य (१) ह्या म्नी युग की लक ४ श्री गाला मल दलु
 ४ ह्या म्नी गाला म य दिति ४ य सिम धि ४ य ल दा नृ ध्यं रुं य स्य ए व न्धन ॥ आ
 पुयी हि ४ पाल ह्या ग्नी सि नू क य वो स मो ॥ ता कृ म्नी ग्नी वि न कला य म्नी सगी
 १२१

नक ४ द वलू रालि को या मि न् का व द म्नी का उ व ॥ म न ल्य का म रु
 बाय म्नी रु क म य रु को । व न म्नी रु स र्ध य रु द्वा त ल्यो पं व्धे र्का को रु वि म
 रु रु क द म्नी को ॥ सि र्ध र्थ ह्य म्नी व ल्य (१) म्नी रु म ४ म्नी रु न ४ म्नी रु मो । ह्या दा
 व क रु कृ ल्य म्नी व ल्य (१) का रु वि म रु क ४ ॥ द्वा गिल गिल य रु ग्नी गिल सि वि

[illegible]

लावणं क्लीवधनं त्वचिपुमं लुप ४१५ काकुल्ल क्लीकृणुगमीनिम्वानि
 पूरुव। मृद्वमावसिर्गंधान्यं यमलुपकृलीकृणी॥ मायादय ४६ मीधन्यं १५ कध
 न्ययवादय ४१५ लय ४ कलमाया १५ वष्टिकाशा १५ पृथ्वी। कलाधन्यानिनी
 वाना ४ क्लीगवध्नविध्नका॥ अथाग्रमू५। ला क्लीया ३३ खलमूलखली। य

ह्राटनं सुप्यमित्री चालनी नितः पुमान्। स्युत्स्य सुवोकः आल। विदो कट
 मिलिऊरको॥ सुमानो न सुव स्यात्। पाक स्नान म हन स। पोवाः। व सुदध
 क सुप का वा सु वल्लवा॥ आनालिका आन्धसि कः। सुदा डो दनिका गुलामः
 यूपि कः कात्तविका ह क का न र्म सिसू। अम क मूहान म विप्र य गी युति

१२२

कानिका। अम वधानिका म न ज क य पि ह न्य पि। ह स न्य पाथ न मी स्या दं न
 बाला न मूत्तकं। श्री व म्बनी र्म सा काना क न्द र्वा सु दती क्रियात्॥ अलिङ्गनः स्या
 मालिकं कर्क स्यात्तुर्गल क्रिका। पि ० न स्नात्य स्वा कृत् कल म्मु छि षू द या
 घटः कूट नि पा व म्मी न वा व र्म मान क॥ अ जी र्म पिष्ट प चन क सा मी पानः

राजनी। कनः कुरु खेदप्राप्तं हे बाल्या कुरु यः पूमान् । सचिमापयनं ह
लुं पाशमयं च राजनी। दधिः कच्छिः खजाकाच स्यात् कुरु दधि बुरु कुरु क
अस्तीति। कं हविर्गकं लिग्रन स्य उनालिका। क उग्र य कल मय वं वा
वउपस्तु नः। गिनि उकं च पूकं च य कान्त मथ वस्तु ज। मविच कोलकं

१३०

कुरु मूष वं धर्म परुतं। जीवका जनता जाडी कदा कुरु उ जीवकं ॥ सुख
वीकानवीध थायथः कालाय कं चिका आर्ड कं ल गवन स्या दथ कुरु गावि
उन्नकं ॥ कुरु मूष वं धर्म परुतं। जीवका जनता जाडी कदा कुरु उ जीवकं ॥ सुख
वीकानवीध थायथः कालाय कं चिका आर्ड कं ल गवन स्या दथ कुरु गावि
उन्नकं ॥ कुरु मूष वं धर्म परुतं। जीवका जनता जाडी कदा कुरु उ जीवकं ॥ सुख

सामवात्मास्तु कंजलानि च काञ्चिकाम ॥ सहस्रं वंभि ऊतु कं वाहो कं हि
गुनाम ० सामत्युगीकाववीपथा वाध्याकाकवनीपृथ ॥ निष्काक्ष काश्चनी
यीगाह विडावववलिनी ॥ सामूदयकं लुलवधमकीर्णवलि वचनम् ॥ से
न्यासीगावमनिमल अस्थिऊ ॥ नामक वसुकायका विरुचकनकव

137

यम् ॥ सोवर्चलकवचक गिलकं नृपमचक ॥ मत्स्यप्रीतानि मं स्वपु विकाने
गर्कनागिना ॥ कूर्चिकाकीवविकनि ॥ स्यादसा लोमाङ्गिना ॥ स्यात्कमनं तु नि
क्षानं विलिनावाहिनाव ॥ ४४ ॥ लाकर्मरुटि रं वरुत्य मस्यालुपे ० न ॥ युवी
गमूयनं ययलं स्यात्सुसंस्कर्म ॥ स्यात्पिच्छित्तु विजिलं ससुष्टं ॥ ४५ ॥ विमं स

म॥ चिकीर्षा महर्षि लिख्यं तुल्यं विन वासि म॥ आपर्कपो विन ल्प धाना जा॥

पेलु मित्रा नगं। यथ कंस्या विविट का धाना रुष्ट यव क्रिय भ दया दय ४ यि

ष्टक ४ स्यात्क व म्हा द धिगं क व भा रि स्मा स्मी रु कं म त्या न मा द ना स्मी सु दी दि वि

४ रि सि द्वा द धि का सर्व न सा ग्र म लु म क्रिया म्॥ मा स न म नि ४ मा वा म लु रु क

132

समूह व। य वा म् रु मि का प्र ल वि ल यी ग व ला स सा॥ ग र्थं लि भू ग वां सर्व

॥ ग वि का म य म क्रियां। त दि यु र्कं क नी षा स्मी इ र्ग वं नी रं प य ४ स म म्॥ प य

त्य मा र्क द ध्मा दि रु र्क्य द धि च ना ग व म्। द्य त मा र्क रु वि ४ स र्थि न व नी रं न वा

द्व गी त रु हे य न वी नं य म् का ग्म दा हा रु वं द्य वं॥ द अ रु त का ल ॥ य म नि रु म

विष्णुन स भगवन् सु गै द त्वि न्ना धि गं या दाम् इ न्नि र्ज नं । म लु न्द वि र व म लु थ य
 आ ति न कै व य य भ ष्म ण ना या वृ उ ना रु द्वा स मु क व ला थ क भ स यी ति ॥ श्री उ
 त्थ पा न स ग्नि ॥ श्री स रु शा ज नं ॥ उ द न्वा उ वि पा ल म रु षा ज ग्नि रु शा ज नं
 उ म नं ल स ग्ना ह ना नि य सा न्वा द र्त्वा दि ॥ सो हि त क र्प्यं र्त्वा रु कि ॥ रु ला उ

133

क स म र्जि तं । का मं वा का मं य यो कं नि का म कृ य धि न्नि र्ज नं ॥ ग्म थ ग्म पा ल ग्म
 स र्वा ग्म धू म्म ही न व त्त्वा भ ग्म म दि ष्ठा दि कं या द व न्च तं द्वा ग वी धि व । ग्म मा
 न ग्म मी ग्म कृ ल लु ग्म थ तं त्वा कृ वा स्य उ । उ खालि म ग वी न क कृ वा य ग्म नि
 ग भू ना उ का रु डा व ला व द ज प हा व च भ जू न द्वा त्ती न रु या ग्म व क्ती स रु

ति नो कर्क। गद्या। गगनवा वत्स। धनार्थात् कलेन कं। यथा महान् महा कः स्याद
 हा कस्तु उवर्ग वभउत्पन्न उ का जगता का दम्य वत्स गवो ससो। आर्षत् १ वलुगाथा
 म् १ वलुगाथा पतिविद नः। क्त्वा यद गस्तु वरु १ साम्ना उगत काम्बल १ स्यान्नाकि
 गस्तु न स्यात् १ पुष्प वाद्य ग पा र्वक १ यूग १ दीती रु वा ध वायू म् यातं म् ग कदा

138

खनति न न दार स्य द हलिक से वि का। ध्व र्व ह धू यत्थो न य धू नी ल १ स्या था वे
 स र्व धू ना वरु १ माह यी सो वरु यी नो वृ ज्ञा मा गा वलु नि ली १ अरु न्य म्मा ना हि वा
 स्या इ रु मा ग्म धू ने चि की। वलु दि ह का ल्म १ स्या १ ग वली ध वला द य ग दि हा य
 ती दि व मा लो व का दाल्य क हा य नी ॥ व ग्म व न्धा व मा का उ म् य द्म क्त्वा थ सन्नि

नी। आकाकायुषहताथवेदरुह्यपयामिनी। कात्यापसङ्गपिजनमश्वेहा
वालगाहिनी॥ स्यादचष्टीउसुकनावकल्लमिपवङ्कका। विवल्गतावस्य
यनीधनूः स्यान्नवल्गिका। सुवनासुख्यसंदाकायानीधायीवनल्लनी। डा
लीवाडागइद्याधनूयावन्धकल्लिगा। समीसमीनासायेइयुगिवर्षपुल्ल

१३५

यगउधसुक्लीवमापीनसमोजिवककीलको॥ नयं सिदामसन्दानं पणुनरुक्कु
दामनी। वेगारयमन्मन्कानमन्कानामन्कदलुक्क॥ कभवादुविष्वक्कामन्क
वीगर्तनीसम। उड्ढकमलकमयमसम। कवरु८लिगु८कलहा८स्य८
लृत्तलकादसवके८पसदवंधने८अंजांकांगील्लु८९लिगु८९अंजाकांगील्ल

रा० गवत्तुक्तगलकाजूजमम० वशावला० छिन्ममदकयं नुठका॥ उ

शिवराजवृन्दस्योद्भवावतारकाजकं ॥ तत्रावतारकालयावतारागर्दला ४

रवनाभवेदहकः साधवाहने गतावालिजालिक ॥ यथाजीवाकायलिकः

कृयविकृयिकव्यस्रभविऊनात्यादिकृयिकः कायकः कृयिकः समो ॥ वानि

135

अनुबन्धमात्रान्तर्यामिनाय चक्रेयमनीवीपदीमलधनंलाहाभिकरुतौष

निदानपनीयक्षाने मयनियमायावधि। यमानूपनिधिन्त्या सः पुतिदानकद

प्रां.। ऊर्ध्वं कर्णं कृतं यमार्थं विष्णुं पतिं नमस्कृत्य प्रणम्य कथा यदि यत्कि

पू। स्त्री व सत्यापन सत्य कानः सत्या कनिष्ठ लियाम् । विप्रत्वा विक्रयः संख्या

१ संख्यं यथा दगां चैव विविङ्गत्वाद्या १ तदेकत्वं सर्वं १ संख्यं यत्संख्यं यथा १ संख्यं
 ॥ यदि वरुत्वं लुत्वं सूचातव न १ लिख्यं १ पंक १ गंगसूत्रादिकमाद १ गुल्म
 लुनं ॥ योगवत्त्वं वरुत्वं यथाप्यमिति मानार्थकं १ यत् ॥ मातुललुत्ति १ पुष्पे लुंज
 १ पंचाशमाषक १ गंगमातुल १ कषाकुवले कर्षचतुष्टय ॥ सूयलुविहो

१३७

दमाक कवुविहो लुगत्वा ॥ गुल्लुत्ति यां यल्लगं लान १ स्याद्विङ्ग निमुला
 आचिगंदगत्वा १ लु १ गंगकटा लान आचिगंग काषापय १ कार्षिक १ स्या
 लापिक गमुक पय १ ज्जुत्ति या वारक डालोखावी वाहा निकंचक १ क
 उव १ पुष्पे लुत्वा १ य निमानार्थकं पृथक् ॥ पादलुवीया लान १ स्याद

गतामेतु कल काशदयामिरुखापतयं विन्तु नक्तं धनं वसुहा हिवर्ध
उविर्लङ्घन मथवे विरुवाञ्जु वि॥ स्यात्कम्य हिवर्धय हिवर्धच ह मत्त
श्रुताकन । गत्याय दनारुत्तुयं नृप्यं तदयमाह ग। गन्तुम तं मन्त्र १३८
मम गन्तुं ह विमलि ॥ गन्तुं मन्त्रिर्दयावत्तु जातायूकादिकपि

य॥ स्युर्लङ्घन केन केन हिवर्ध ह मत्त कं । गपनीयं गन्तुं गन्तुं गन्तुं
कृष्टुं । तामीक वं जा गन्तुं पम हव जग का वन । नृप्यं कारुख जं नद मष्टा
पदा म्नीया ॥ जूलं का वसु वल्लुय च्छु म्नी कनक मिरुपि । इवर्लङ्घन जं नृप्यं ख
रुर्न प्यत मिरुपि ॥ नीति म्नीया मान क्क न म्नीया मथ ता म्नीया । उल्लु म्नीया

ब्रह्मविष्णो इमं वाचि च । लाहं मुनिं कर्म नीदं विष्णु कालाय सायसि ॥
तस्य वाचं पुनं सिंघानमपि गन्तुं । सर्वं च मे जितं लाहं विभावत्ययसः
कृष्ण । कान्ठकाचायवपलावत् । सुगन्धं प्रपाद । गवर्तं माहिषं ॥ रुमं
कं निविजामल । आगाञ्जनं उल्लोकी वंकायाणां जनयामूर्तं ॥ उल्लोकी जनं नि

१३२

स्थितीं विदुः फलमयवकी । कर्पूरी दक्षिणा काला ॥ अहं वदं नृपतिं जननी ॥
सगर्भं तां लोलीं गन्धमनिगन्धकं सो गन्धकं यक्ष्या कृत्वा न्योऽनु कल्लिक
का । वीणिपूष्पां पूष्पाकं उः पोष्पाकं कृत्वा माञ्जनं । विजयं पीतं गालं मालं च
हविगालकं ॥ गोवयमर्थं निविजं मञ्जु गिलां जतु । बालगन्धं वसुधा

वृषलाधजयनयजांश्रौ वाउलाउसं कीकुजिस्वकनलदयः॥ गूडा
विष्णुस्वकनलदयः॥ वृषलाधजयनयजांश्रौ वाउलाउसं कीकुजिस्वकनलदयः॥ गूडा
क्रियाविष्णुमाहिष्यायक्रिययाः॥ कलायाम्बुजाः॥ सुगंधाः॥ कला
क्रियायाम्बुजाः॥ वेदिकाविष्णुमाहिष्यायक्रिययाः॥ कलायाम्बुजाः॥ सुगंधाः॥ कला

१४१

संतवः॥ स्याच्चालुजनिमायाः॥ कलायाम्बुजाः॥ वृषलाधजयनयः॥ कान्तिनीसंदर्भे
आः॥ प्रसासः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥
वः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥
सोचिकः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥ कलायाम्बुजाः॥

स्याद्योकावालाहवकशनाडीधमः स्वर्गकावः कलादानुष्कावकः। स्याच्छी
र्यिकः कामविकः। लोहिककलसुकुटकः। तकावर्द्धकित्त्वष्टावधकावः
यकावर्द्धकः। ग्रामाधीनाग्रमतकः। कोटकानधीनकः। शनिमूलिदिवा
कीर्तिनायिकाकावर्द्धकः। शनिवर्द्धकः। स्यात्तुजकः। लोहिककामलुहान

१४२

कशजावालः स्यादजाजीवादेवाजीवमुदयलः। स्यान्मायागमस्त्रीमायाकान
रुपमिष्टावकः। लोहालिनमुलेरुषाजायाजीवाः। कशान्विनः। तवगा
रुह्यपिनटाव्यवधामुकुलीलवाः। मार्दगिकामोनजिकाः। यालिवादासुपा
लिघाधवयूष्माः। स्यूर्वेराविकावीलादसुवेलिकाः। जीवाककः। गान्धिका

द्वोवाकूलिकजालिको।वेगसिकःकोटिकश्चमीसिकश्चसमलुय॥एत
काहमिउकर्मकवावेगनिकापिसुधवालावहावेवधिकाहाववाहसुता
निकःविदुःपापवानीचःपाकनप्यपधजनःविहीनायसदाजः
लःशक्तिकःपानप्यसुधरुलदासुयदासुवदासुग्नप्यकचटकधनि

१४३

शास्त्रिकिकवयेवाउजिषापविचानकाधपवाचिगपविस्तुन्दपवजा
नपवेधिताः।मन्दस्तुन्दपविमज्जालसुःगीतकालसानुषुः।दकृउच
उवयगलपटवःस्तुलानउमप्य॥वाउलसुवमातमदिवाकीर्ति
जलमसाः।निषादस्तुयवावकवासिचाउलसूकसाशरुदाःकिवा

गण वनपूलिन्दाः सुकृजागयभायाधमृगवधजीवामृगयुल्लिखकापि
सुभकोल्यकः सानमयः कूर्कवाभृगदंगकभुनकातयकः व्यासा
दलर्कसुसुयानितभग्धविश्वकर्म्मगयाकृगलः सनमागुती। विद्व
नः एकवाग्ध्यावर्कनः सुवृत्तः पण्डितः आकादनमृगयस्यादाश्वरा

१४४

मृगयालिप्याः दक्षिणवर्ल्लिखयागर्दक्षिणामाकूलङ्कभञ्जोवेकागविकल्
नदत्युगल्लनमावकाः पुनिवाधियवाल्कनिपाटवनमलिम्लवाग्धोविका
लेन्योर्थचल्लयल्लुववृनी। वीगसल्लयकवर्णयन्तर्नमृगयकिर्ली। उन्मा
थः कूटयं ग्ल्यादागुवामृगवन्धनी। पुम्बम्वनटकसुगुनर्जलिषूवटीगुल्लभाउ

द्यागर्नद्यटीअर्कालिला द्वाहनपदशयूसिदमावायदलुः ॥ सुजालिनविग
 कवधवालिधूमिः ॥ योउल्यपूरुसप्यादिकमलि। पथसलिकापूरिका
 स्यादमुदकादिति ॥ कृगः पिटकः ॥ पटकः ॥ यजामंशमाधविहंगिका ॥
 हानयद्विहंगालविः ॥ निरुं कावाययाइका। पाइनेपानकीसेवानुपदी

१४५

नापदायना ॥ वहीवलजस्यादकदकाउनीकगा। वलुलिकाउक (कुलिया
 सचलुलवत्तकी ॥ नानवास्यादशलिका ॥ ललु निषमः ॥ कषः ॥ यथनः ॥ प्र
 पवउनीषिकागलिकासंम। गेजसावरुनीम्वारुकाचर्मपुषविका। ललु
 रनीवधलिकाकपावीकर्तनीसम ॥ वृकादनावृकहदीटकः ॥ पाषाटादावरा

भक्त कवाली कवयण स्यादा चर्म हृदि का ॥ १४ ॥ अस्मिन्मन्त्रादयुगिमागित्य
 कर्म कलादिकं । युगिमा नं युगिनिर्मयं युगिमा युगिया गता ॥ युगिच्छायायुगि
 युगिवर्चायुगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं
 युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं
 युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं युगिनिर्मयं

[illegible]

मधुमाधीकतदथाभमेवयासासुव४सीधूमदिकाउगल१समो॥संभानेखादति
 वय४कि॥धूपसिउनग्न१कावाहन१सुनामउमायानेयाने॥गदिकीभाच
 वकास्तीपानपाउंसनकार्यनूतवर्ष॥भक्तिकदवादिगवाक१भक्तियुग
 कत्समा१स्यूर्नेग्नका१युगिउव४सुनिकायुगकावका१युगालियामक

१४१

द्वदयाल४सूददयामहात्साहामहायम४यवीलानियूरुमारि
 शाविरुनिष्कातनिदिता४वेरुनिक४कृतमूरव४कृतीकूललं
 लयि॥यूय४युतीक४सांगयिक४सुगयायनमानस४दक्षिणीया
 दक्षिणा४रुल४दक्षि४रुल४यि॥सर्वदान्यलूललददानलो४यक

क॥ अ॥ सि॥ ना॥ तित॥ वि॥ ग॥ यालू॥ र्दी॥ ग॥ दि॥ वि॥ ॥ बाल॥ ॥ यालू॥ क॥ य॥ त॥ यालू॥ मु॥
 पा॥ त॥ क॥ ॥ ल॥ ज्ञा॥ गी॥ ल॥ य॥ उ॥ वि॥ स्र॥ च॥ न्दा॥ न॥ न॥ हि॥ दा॥ द॥ क॥ ॥ ग॥ ना॥ न॥ र्पा॥ ग॥ का॥ हि॥ मु॥ ॥ स्या॥ दि॥ ॥ १५२
 स्र॥ व॥ र्द्ध॥ त॥ ॥ उ॥ त्प॥ ति॥ स्र॥ क॥ त्प॥ ति॥ गाल॥ क॥ वि॥ न्दु॥ म॥ ॥ ॥ ल॥ स्र॥ की॥ वि॥ स्र॥ क॥ वि॥ ना॥ व॥ हि॥
 स्र॥ च॥ हि॥ त॥ ॥ स॥ मो॥ ॥ नि॥ वा॥ क॥ वि॥ स्र॥ ॥ कि॥ द्रु॥ स्या॥ ता॥ उ॥ सि॥ ग्ब॥ मु॥ म॥ इ॥ न॥ ॥ का॥ ना॥ उ॥ वि॥ ॥

ना॥ वि॥ न्दु॥ ॥ वि॥ का॥ गी॥ उ॥ वि॥ क॥ स्र॥ न॥ ॥ वि॥ ह॥ त्प॥ ना॥ वि॥ ह॥ म॥ न॥ ॥ य॥ सा॥ वी॥ च॥ वि॥ ता॥ वि॥ ली॥ ॥
 स्र॥ हि॥ स्र॥ ॥ स्र॥ द॥ न॥ ॥ क॥ का॥ ति॥ ति॥ क॥ ॥ द॥ ति॥ ना॥ द॥ मी॥ ॥ का॥ ध॥ ना॥ म॥ र्म॥ दा॥ ॥ का॥ पी॥ च॥ उ॥ त्प॥ त्प॥
 क॥ का॥ य॥ त॥ ॥ जा॥ ग॥ न॥ का॥ जा॥ ग॥ ति॥ ना॥ द॥ हि॥ ग॥ ॥ स्र॥ न्न॥ क॥ ॥ यालू॥ वि॥ डा॥ लू॥ नि॥ डा॥ ल॥
 यि॥ मो॥ स॥ मो॥ ॥ य॥ ना॥ द॥ स्र॥ ॥ य॥ ना॥ ची॥ न॥ ॥ स्या॥ द॥ वा॥ द॥ य॥ ॥ धा॥ म॥ स्र॥ ॥ द॥ वा॥ न॥ च॥ ति॥ द॥ व॥ द॥

विष्णुश्च विष्णुगच्छति। यः सदा च नित्यं ह्यसतिर्यद् यस्मिन्। चरति॥ वदा
वदा वदा वका वागी॥ वाक्कृतिः समो॥ वाचायूक्तिः यद्वाची वाक्कृतिः वक्
नि। ह्यारूत्या कस्तु वाचा वाचा वद गच्छ वाक्॥ इत्युक्तं मुखना वद मुख
गः कृः प्रियं वद। लाहलः ह्यद ह्युक्तं वाक्कृतिः वादी उक्तं वद॥ समो कवा

१५३

दकृच नो ह्यद सोम्य सनास्य इव भवनं दाना नान्दी वादी कनः समो॥ ज्ञा
जैः कृत्तु मकस्तु वक्तुं गता उ मक्तिः। ह्यकी गीत ह्यकी कान्त वासादि गम्य
न भानि कानि ना। वद कृः ह्यद यद्यस्तु भिक्ता गता। आरुग वाहि रुतः ह्य
दायितः साधितः समो॥ यथादि क्षनिन रुक्तु यथा स्यानि ना कन भानि कृत्तु

मुविपुद्गमाविपुल्लमुवाञ्चरगभपुगिगह८पुतिवडाहगव्यस्याचघातक८
 अघिनिफ८पुगिनिफोवडकीलितसंयतो। अयनजायत्याफ८स्याफान्दि
 शाकास्यद्रुगशाआकाविताहिगल्लगंकसूकास्त्रिव। यमनालोपेनको
 दोविहसुवाकूलोसमोविहयाचिकलस्यामुविवागविहइहधीगकप्यः

कलहसन्नद्वयगमायीवक्ष्यम ॥ द्वयत्वं किमवावक्ष्य ॥ गीर्षं च दध्मो
समो विषाविषराकक्ष्यायामुत्थामुत्थलनयशालिष्विदानः कृष्णकामो व
पलम्बिकलः सप्तोदोषे कट्कपूनासीगानिकगस्त्यनृशः ॥ १०॥ कल्लुज
यः स्रवकः स्यात्तिष्ठुनारुर्जनः खलानृगसाध्यागकः कृवः पायाक्षरुत्तु

कञ्जक ॥ अहं मरुतयध जागम स्ववेधेयवालिग ॥ कदयकियल रुद कि
 न्यवानमिग म्यवाशनि ॥ लुमुद विष्वादीनादविडा फुनगायित ॥ वनीय
 कायाचन कामाग्रीलायाचकारिती ॥ अहं काववानहं य ॥ उहं यमुगुण
 विग ॥ दिवा पपाइ कादवान्गवाद्याजनाय जा ॥ खदजा ॥ कसिदं गवा ॥

१५५

पकिस्तयादिथालुजा ॥ यालितवर्ग ॥ ॥ उहिदल नुगुलाभाउहिद
 किर्जमहिद ॥ सुन्दरचिन्वा नुसुयमं सधूला रुनी ॥ कार्कमनावमं नूचीम
 नाहं म ॥ मंशले ॥ गदसचकं रुफना सुकायस्य दर्शनात् ॥ अलीखली
 प्तिगीरुधं दयिगं वलहं पिय ॥ निरुक्तपुनिककार्वव रुयाच्यावमाधमा ॥

कृपय कृत्तिना वद्य श्व टग फाला कं समा ॥ मली मस्तु मलिर्न कच्चन म
लद्विर्न ॥ दग्ग पविर्न मध्व च यी ध्वकु विमलार्थक ॥ निरुक्तिं ॥ मध्विर्न म
द्वि ॥ १८ ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥
वपु म्भानं पमूषय व कानू रुमा रुमा ॥ मूर्या वय्य व न र्म म्भय पु व र्म न व न

१५५

द्वि ॥ पना द्विग्ग पागुरु न याम्भुगी यम लि य ॥ १८ ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥
मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥
मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥
मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥ मध्व म न वस्तुन ॥ अस्तानं हलु ॥

[illegible]

द्वाविंशमः सर्गः कृत्वा समस्त निखिलाखिला निर्गमः ॥ समस्तं सत्कृतं कलं द्रष्टुं म
 र्गं तुल्यादन्तनकः । धनं निनकं वंस्तुल्यं लवं विनलं गतं ॥ समीपं निकटं सन्नसंनि
 दं सती उवत् ॥ युवगायास्तु विधस्तु मयादिः ॥ वंस्तुल्यं । उपकृतं क्रियात्य
 तुल्यं गुणप्रतिभा ॥ ययं ॥ संसृज्य व्यवहितं मयदात्तवमित्यपि । नदिस्तु मन्त्रि

कर्मस्यार्द्रनं किय कष्टकं ॥ दधीयन्वदविष्टश्च सुद्वन्द्वीयनायगं । वरुणं नि
सुनं वरुणं = वधुनं लनगानगं ॥ उच्चैः शान्तिनादप्रसिद्धिमास्तु । गधवामनं । न्य
द्वीचक्रस्य स्वयं स्थितवाग्धवनगानगं ॥ अनालं वृजिनं जिष्णुमूर्ध्नि मल्लं वि १५८
गनगं । अत्राविष्टं कटिलं गुणवत्तिनं वक्तुमित्यपि भट्टजावन्मपुगुलोपाक

लपुगुदम् ॥ कलो । गन्धकमुद्रु कानित्यसदागनसुगनाना ॥ स्फुटं ॥ स्तिनमवः
स्फुटाने क्कनयनया उच भकाल व्यापी सुकटस्तु । स्फुटवना जम्भ तव ॥ चविम्
स्फुटमचः वंशसमिद्धिं चनाचनं । चलनं कम्पनं कम्पुचलं लालं चलाचलं ॥ च
चलं चपलं लं चैव पालिप्तचपविष्टं । अतिविष्टं समभिकाट्टसंविष्टुसंलग्नं ॥

चक्रमयिलविम॥ अत्रुदलुमर्मस्य गवाधुतुनिवर्जल। यतुयवमिकूलं
स्यादयस्यमस्तु॥ वामं गनीवस्यस्यादयस्युदक्ति॥ संकटनाउ
संवाधःफलिलंगदनेसम॥ हीकीर्तुसंकुलाकीर्तुमलुगं पवि वापिम।
मुधिमं गृहिमंद्वी विलुगं निस्तु गंग॥ अकर्मनं विलुगं स्यात्पुसिदि

१५०

गंसम। वल्लिमं पाखिता धनचविगा कं पिगा धूम। नूरुनूनालुनिदूगा वि
द्वक्तिफविगासमा॥ पविक्तिफं तु निदुगं मूषिमं मूषिगार्थकं। पवद्वयसु
गन्यरुनितु धुगुनिगारुग॥ निदिद्वयपचिमं गुरुगुफं तु निगुरुषिमं।
दूगावदीर्तुउद्वुगं यमकाविगलिक्तिगं॥ स्यात्पुगं दिग्गलिफसम

दक्षाद्वृत्तं सप्त। वृद्धिर्गत्या दत्तस्य गंतं वीरं ब्रह्मावृत्तं। वृत्तं तु (नधन
 निगच्छात्मानं निगच्छि। ह्यदिना (नमः पक्षे) जानकी गो तुल्यं न॥ वृत्तं
 १५१
 तु वृत्तं वा वृत्तं संजातिगुप्यादिनधजाप्यं गच्छं सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं
 ॥ गुरुः स्यात्संक्रान्तिः १ वगी १ ४ स्यात्तगद ४ ॥ विविधस्या दक्ष विधा तानाह

सः १ एतन्निध ॥ अत्र नी (नमः) पक्षे गच्छं सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं ॥ अत्र नी (नमः)
 सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं ॥ अत्र नी (नमः) पक्षे गच्छं सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं ॥
 पितृपाकं नीरा सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं ॥ अत्र नी (नमः) पक्षे गच्छं सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं ॥
 पवित्रं गच्छं नीरा सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं ॥ अत्र नी (नमः) पक्षे गच्छं सप्तार्धस्य ननी दीप्तिं स्रुतं ॥

[illegible]

गमूगं च वि लिग यं गलु सुकन । ह्यादहि गं नमालि गं नमप चायि तायि विनिता
पायि गं ॥ वनि व सि गं व नि वि ग मूपा सि गं या प य वि गं च । तुका पि गलु ग का
ध पि ग ध पायि गो च द न ॥ रु क्षा म लु लु फ ॥ उ रु ग ॥ उ मू दि ग ॥ पी त ॥
चि नं रु गं लु नं रु लं द गं दि गं व रु ॥ ग लं ध लं रु रु रु रु नं प न्नं ग ति गं च

गं। लङ्घ्याय विनं ताविन मासादि नंच हं नंच॥ जू न्वविनं गव विनं मनि छं
माविनं मनिनं। जू ड सा ड कि न्वनि निनं कि निनं ग सु मू न मूलं च॥ जू वं ज
नं वा कि न म विनं ल म पा विनं गु म॥ जू य ग निनं म ग ना व ह्म न् जू य मा निनं च य
वि लु र्ग न॥ लू क्क ही नं वि धू नं सु मू क्षी नं ध्व न मू ल्ग नं। वू ड वू धि नं म नि नं

१५३

विदिनं यु नि य न्न म व सि ना व ग नं॥ उ नी क्क न मू न नी क्क न म्हा क्क न मा लू र्ग नं यु नि
लू र्ग नं॥ हं की लु विदिनं हं लू र्ग नं सु मा दि ना य लू र्ग ना य ग नं॥ जू लि न ल लू प ना
यि न प ल यि न पु लू न प नि ना नि चं॥ जू पि नी लु व लु मा सि क्क न लु मा नि लु ना
भं नि॥ ह्म नि न व वि न ज म्भ ग ह ल ह्म ल्ग नि नं गु क्क॥ ह्म पि लू ना दि पु लू र्ग नं

क निष्कृति क वं हि सा ॥ निष्कृति क डाली मित पृथु पो वन वरु पु क मार्थ ॥ सा
दि क डाली कृष्ण गति क डाली कृष्ण निष्कृति क डाली वा र व्या यन व ग्नि गु न वा
मे न कृष्ण न का गि रा य ॥ ॥ निष्कृति क डाली निष्कृति क डाली ॥ पु क निष्कृति
मार्थ ॥ स की ल्प ति क मृ त्र य रा । क र्म कि या ग सा ग ल म मारु न प र म

१५४

वा ॥ सा कल्या न क व च न पा ना य रा य रा । य द काले न गा ह तु क्ति च्या च
सा विल क्ति ॥ ग म ग्नि कि या कि मु द म धा द न ॥ अ व दाने क र्म र्म का म्य दा
न य वा न रा ॥ व रा कि या स व द न म ल क र्म र्म का म्य दा ॥ वि क्त न न वि क्त व नी ग
प र म य रा ना व न ॥ य र्म कि ॥ सा ल्य कि उ य र्म द क्त वा न दा मि ल्य पि । स व र्म सी

यनजया निगद निगद मा दामद उह गउडु मो ॥ विमर्दन पविमला रे
त्य पराणि नदु गुरु निगद ॥ कदि न इ ॥ स्या दहि या गस्त्य हि गुरु ॥ मं
दिव न्मस्तु सद्भा हा डि म्म उ म न वि सु वी । व न्म न पु हिति म्म न ॥ स्य र्ग स्य
र्ग नि वा ध न या नि गि धा ल्प थ न् ॥ स्य र्ग ॥ स्य क्ष प त फ नि ॥ नि का ना वि

१५५

पु का न ॥ स्या दा का न स्ति न्म र्ग नि न् ॥ प नि ल म्मा वि का ना ह्म स म पि ॥ क नि वि
कि य ॥ क वि का न स्त ज्ज धा दि रु म्मा ज्ज प स न स्त प च य ॥ स मा हा न ॥ स मू च य म्
पु त्या हा न उ पा दा न वि हा न स्त प नि कु म्म ॥ ज्ज हि हा ना हि गुरु र्ग नि हा ना ल्प व क
प र्ग ॥ ज्ज न्म हा ना नू का न ॥ स्या द ध स्था य ग म च य ॥ पु वा रु म्मु प द्दं व हि स्या ल्प

वहाकगमनं वहि ॥ विद्यामाविद्यमायाभायमः संयामसंयमो ॥ हि सा कर्माणि
चावः स्याज्जागम्यजागनादया ॥ विष्णोः कृत्वायः ॥ यत्सहः स्यादयश्चाक्रिका १५१
उयानिर्वर्तयउयस्यागः स्यात्पविस्पर्शः ॥ यविजिज्ञा ॥ विष्णुर्ननु उविष्णुः
धाः ॥ हि सा यच्छन्दजागमसं कृत्वायः संयामसंयमो ॥ हि सा कर्माणि

पविस्पर्शः यनीसावः स्यात्किमि ॥ विष्णोः कृत्वायः ॥ यत्सहः स्यादयश्चाक्रिका
स्यात्सद्वर्तयउयस्यागः स्यात्पविस्पर्शः ॥ यविजिज्ञा ॥ विष्णुर्ननु उविष्णुः
धाः ॥ हि सा यच्छन्दजागमसं कृत्वायः संयामसंयमो ॥ हि सा कर्माणि
नतिष्ठावः ॥ यत्सहः स्यादयश्चाक्रिका १५१

स्यादपह्नवः पुस्तकः पुस्तकसमो ॥ धीराः किं निष्कामास्तु संकमा इति सूचनम्
पुरुषः कर्मयुगमागमार्थः पुस्तकस्य स्यादपह्नवः ॥ स्यादस्यादानमूल्यागजानम्
४ संयमस्तुना ॥ पुतिर्यं धः पुतिर्यम् २ वनायस्तु नियामन ॥ उपतं रस्तुन
रवः ४ समालंशानुलपते ॥ विपुलं शाकियुयात्ता विरस्तुमिस्तुर्जते ॥ विष्णु

१३८

कमुपुतिस्तुतिवयं ॥ पुतिजगनानि प्राणिप्रयत्ने या ० न मस्तुमोस्तु
नमः ॥ आदीनवायुचोक्तामस्तु कस्तुगस्तुमो ॥ सुम्बीकस्तु विस्तुयनं माग्नसि
मृगस्तुमृग ॥ पुनिवस्तु ४ पुनिवस्तु ४ सुस्तुमस्तु उपस्तुमस्तु ॥ निर्वस्तुनं सुनिवस्तु
तंदस्तुनालाकस्तुमस्तु ॥ पुस्तुस्तुनानि वस्तुनं पुस्तुस्तु ॥ पुस्तुस्तु ४ पुस्तुस्तु ४

मया विना यन्त्र पय्यायिनी यनाथको ॥ आर्त्तनै च मगी याचद्दी दी याचद्
नार्थक ॥ आर्त्तया सा विपय्या सा यन्त्र विपय्य ॥ पय्या याति कुमल
स्मिन्निपात उपाय य ॥ पुष्पली यत्तु मातु य न गत्या य निग सत ॥ सुस
हाव ॥ कुटुम्ब या लुक्ति रुमिदि जन्मना ॥ निष्पन्न यत्तु न यत्तु काय काय

१५२

सुउद्यन ॥ सुवच्च सुलं यच्च न ॥ सुभा यन विद्वय न ॥ आ वि ॥ वि वि वि वि
न ग र वि वि सु म निप ॥ उल्ला व स्थ नि का व स्थ दो क्ष या लु प नार्थ को ॥ नि ग
ना क्ष गै व वि का वा रु सु मु ग न वा दि धू ॥ आ न ल्य व न नि वि व नि उ य न म या
लि य उ नि ष्ट य भ नि ष्टू नि वि ष्ट व न नि ष्टी व न नि ल्य हि त्र मि ॥ ज व न रु मि ॥

साति ४ त्ववसाने स्यादथ काना हर्षि ४ उदजमु प्रमुधुन वाम कननि निखाय ४
२५५ ॥ गानक स्य स्य वृन्द मिहो वगव कादिकं ॥ अयिकं ॥ कृतिकं ॥
वमायम स न सान् ॥ मानवा ॥ ४ माणसौ ॥ श्री सहायानी सहायगा ॥ हत्या हला
निराक्र ॥ ववाउ यदुदि जमना ॥ द्वयर्क कानी पृष्ठा नां पार्श्व पृष्ठा नूक

११०

मान् ॥ खलाना सतिनी खल्यायथ मानव्य कं नृणां ॥ अमता उता कृष्या पाल्मन
ल्या पृथक् पृथक् ॥ अपि सा हसु कानी व वामनार्थ च नादिकं ॥ ॥ गृहितं
कीर्तु वार्त ॥ ॥ नानार्थ ॥ कपिका कादिवर्तश्च वागकीर्तिगा ॥ हविष
आगाय ययूय र्याय च पि न मूर्त ॥ अका ॥ निद वना काला ककुतु वला

ज न। य थ य ग। सि च। ल। क ४९। व र व। ऊ व ग। य च ४। उं वू को का दू व न। लो वि
पि गो य धू का कू को। अला को द ग। ना धा नो रु नी य ट ह मान को। उत्संग विद्रया
व क ४ कल का का य वा द या ॥ ग क काना ग व डू या व र्क १ रु टि क लु र्य या ४॥
मा न न व ध सि च। ध्र पू सि क ४ क नो सि १ मू ना ॥ स्या त्पू ला क लु क धा न्य स क

परकृति कृष्ण उलूक कविनायक मलापान चपचक गणक मण्डलोचक न
 कः सुगम रविनायक भक्ति कुरु विगल्लोचक कीट चटुस्थिकः पा
 निरुलपतिकः विश्वकदम्ब उपलस्य रंभल्लारुतिकः उलूनिभक हृद्यारुह
 द्यपिच ॥ श्रील्लिका यन्त्रिधाष चकाषागक थरुल ॥ सिग चमदि वसामल्लक

ह्यादथसिद्धक ॥ मिलकल्ल चपिष्ठाकावाहीकं नाम ॥ १० ॥ च । महत्तुमु
ल्लुल्लकयालयाह वृकोलिक ॥ नृकायण कात्यागक ॥ सत्यः पिशुल्लकलि
ष ॥ जेवाहक ॥ गणक पिरूयन शल्यस्यवरुका ॥ बाधुपिपूनीकानायवा ११२
नामदीयक ॥ गालाहक ॥ कपिकारुक्षन ॥ हल्लुपि लेविक ॥ पीजार्थ

पियालीकं ह्यादलीकं लुपियन ॥ गालान्धयावनरुकाह ॥ लल्ल ॥ साष्ट ॥ गल्ल
वडुनिहन्नुनाह ॥ सल्लयल्लदीनाम पिचनिका ॥ लीकल्लाहीसमलेनसा ॥ गदक
थथपिताकाही ॥ लल्ल ॥ कनधन्ना ॥ नृकाक ॥ कन ॥ लल्ल ॥ मयजाल्लचका
लिफायागनाह ॥ कल्लिकाकल्लुल्ल ॥ कनिहल्लाहुगोय ॥ प्रवीजकाया

लिखतु ॥ वृन्दावकोरु मिमूथो जेक मूथ्यान्धकवलाधस्य दीति कको
कूटिकायल्यावनिगकलगातालाटिक ॥ पुताहीवदगा कार्याक मथय ॥
॥ ॥ गुणिकाकवर्ग ॥ ॥ मयस्यसिद्धवदातासुतिवालो निलीम
सो ॥ ॥ खानिलो ललाटास्त्रिककोनसुतिथपिथ ॥ ॥ चलिनालजुपिलि

113

खरवाकलोलवकोनगभवलो ॥ आगुलो वायुविलिखोगावार्कविहगा ॥ खम
॥ यमलो पकिस्तुथोचपग ॥ कुमूकवन्दया ॥ वगवापिग ॥ वग ॥ पुवाह
जवथावपि ॥ पनाग ॥ कोसुमनलो सानीया दोन ऊस्यपि ॥ गजपिनागमा
गलो ज्वागलिल कपिच ॥ सुर्ग ॥ सुहावनी मांरुनिथयाप्यायसुष्टि

शु॥ यागः सन्नहनायायध्वानसु नमिसूक्तिषु। हागः सुखलुआदिरुगावहं
 चरुकाकाययाः। चागकहविः। यूपसि। वावगः। गवसुलिषु। फयो वधुव
 गः। मथल्लहियंगः। पराहवः। पानाध्वः। गयगः। यूपसि। यूनयूः। मकगादिषु
 ॥ सु। मर्षु पशुवा। वज्रदिद्वु। उद्यलिलुजल॥ लम्भाद। अमरुया। यूपसि। मेहि

[illegible]

स्यपधयं सिमधसिगसिष॥ अतिष्वपलसुयचगहकोचन॥ क्रियान्॥ क
कान्तपवधस्तननदीरुकापिसंमगभासुसंनरात्रकयकउक॥ सुवकहान
या॥ ककिताक्षीवहिरुजोदकविपुष्टुजादिजा॥ अजाविमृहनकागा॥ ११५
काधनिचमदायजा॥ धर्मनाजोतिनयमोक्त॥ असदकपिनक्रियान्॥ वसि

अकण्डवर्षाववलजावलुदगनिभासुमंभ्या॥ ननलायाजि॥ पुजास्यात्स
नमोजन॥ अजोराखगगाकोचस्यकनित्यनिर्जसिषाप्रुस्यात्सनिपवीला
चकण्डायायतिंगक॥ सस्त्रायाचनानामहकाचनानामहकाद्यैष्व
र्थस्तुवना॥ काकहग॥ कुकवदोगजगलुकदीकटी॥ लिपिविष्टुखलमोड

मन्त्रमिदं वद वलित्वा यत्तु स्यादित्युदे यत्पिनद या ॥ वसु क ४ क ६
 कार्यं छिद्रमस्तु न गी कृ या ॥ निष्कृ दना तु ता ता व क्ष निष्कृ तु तु ता तु ता ॥ मा या
 निष्कृ ल य तु वृ के ग या नृ ग ना नि वृ ॥ अ या घ न ले ल टं (ग गी बी (ग कू ठ म ति
 या म् । तु शे ला या ए टि ॥ कृ त्या ग् कालं त्य स ग य पि ता ॥ अ त्यं क मा गं य ॥

११३

का घा म ल ल म क च क टा ॥ ब्रू कि ४ रु ल स म डो च द कि क्कान कि द लं न ॥ अ वि र्वा ग
 रु या ४ रु रु नि षि म व रु नि छि वृ । क रु रु रु रु ग रु न द ता म न्दा ग द वृ रु ॥ य द र्श
 वा च लि गो व नी ल क ४ ॥ नि व पि चा पृ ति का क्षा नृ र्ज ० वं कृ ग् ला क ग् रु रु था ॥
 नि ष्य नि ष्य लि ना ग्ग का ४ का क्षा क र्ष ति नो दि नि । छि वृ श क्षा र्ग नि ग रु पि क नि षा

मिथुवात्यशब्दः। अलीलुगुं पित्वाहुं अगल्लुपाकयाधस्यमीसात्यः
वाजेह। अवावलिउरुमा॥ अयं गगलाकारिनाजीकालचिषह।
का। अलीदुवाधर्ववन्निवेसुनवादिगर्हणककुयाधगकल्केलोचि
पूदोशुतोविन्यसुसंदमो। अवाकुकुमुलगर्हवा। अवावलिमुनसुव॥

१११

क। अवावलिमुनसुव। अवाकुकुमुलगर्हवा। अवावलिमुनसुव॥
अधनचिच॥ मोर्द्याड्यागिगसुलेगुक्तसंक्षादिकगुल॥ निष्ठापानलि
नो कालवि। अवासुव॥ अवाकुकुमुलगर्हवा। अवावलिमुनसुव॥
अव। अवावलिमुनसुव। अवाकुकुमुलगर्हवा। अवावलिमुनसुव॥

[illegible]

श्रीमन्नरुद्रविष्णुवल्लभनरैलवर्गहवनक्रियाः ॥ प्रहृष्टकमलचित्र ॥ विष्णु
 शिमेनलादष्टमीकृष्णीयैर्यवविष्णु। प्रमादीदुर्मर्यादाभक्त्यन्तःप्रमाह
 वृ॥ कनकासाधकगमंरुद्रगामुद्रयव्यपिप्राप्त्यादसीतवदामसीवाधय
 न्नगमो॥ द्युभयपथवाकान्नसमूहवदामूनय। अगतिमृविषादीत्यात्य

ॐ गत दत्तया ॥ ७८ ॥ ४८ मन्त्रार्क य क ना उ च ॥ ५८ ॥ सी की (हो) निचिता
ॐ द्वावी व र्ण न्य म्म व न । द व ह्म यो विव ह्म को स व ह्म को न द ह्म यो ॥ पक्ति गा
ॐ ग न्म को ता स पक्ति (लो) ॥ ७९ ॥ न्म यो गो ध म क रु जी न्म गो म य य व गो ॥ ८० ॥
को उ पा लिन क ॐ म न्म गो य व ना म नो । य ना द ह्म य क ह्म न ह्म य ध ग नि

११२

पा क नि ॥ यान यान लि (लो) या त ४८ ॥ ४९ ॥ यान्म क व म्म न्म ह्म द व र्ण क रु ४८ ॥ पार्थिव
ग न य स म्म ॥ ५० ॥ पति ४८ क व र्ण द व ह्म ह्म मिध व न य । म्म ह्म वि वि का रु य वि
ॐ क रु म्म ४८ म यि च ॥ वि क्ता व य जि ता य को ह्म न ह्म क वि सा व र्ण यो । यो । य
य ४८ ॥ वि द्वा का व र्ण म्म नि द र्ण ॥ ५१ ॥ क्ता ह्म न (लो) का ४८ ॥ व य य

मपि १५५५ । वृत्तांतः स्यात्सुकवः ॥ पुकावकास्तु वारुया ॥ ज्ञानरुं ४ समवन्त
स्यत्ताननीदि । ॥ स्या ॥ कनाकायमसि द्वाकद वाक ॥ लकर्मसु ॥ ८८ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥
नसवकादिमहात्तानिगुरु ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥
गवः ॥ कनाकाव पि १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥

रुं ४ काठिन्याकायथा ॥ विष्णववत्यार्षगतिमर्षगीवादि ५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥
वपचिति ४ सागिदीनावसानथा ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥
मना ॥ पुचानस्यन्यावीगीवीति १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥
नात्यनिशययूग ॥ वी १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥ १५५५ ॥

नागनाशागवखधसहना।सहसरायासमिति॥कयवासावयिकिति॥न
 ववर्चिष्यगामुअवक्रिकालाचदनय॥उगगीउगतिचुदावि॥अपिक्रि
 गावयि।यकिष्कुदापिदसमंस्यालुतावपिवायति॥परिगमोचमूलु
 प्रकृति॥पदसंदया॥युक्तियानितिलिगविकेलिकायाश्चदृल्य॥सि

१८१

कगा॥सूचालकापिददप्रवसिचष्टि॥वनिगाजनिगाएकानूनागयाश्च
 यापिति॥उकि॥शुनियूदासपिष्टमिधवराधीयथा॥दरुगीकुडयालीकी
 कुदाहदमहएपि॥यासिगाकुकिनि॥अथवाकविहीजनप्रमो।वार्हद
 लुअवागउलिअमूवचगामर्ग॥कलक्षोर्गनयहंम्रा॥निमिरुदउल

[illegible]

१८२

सिन पीम लुङ्क वे डाई नो सिनो नो सिनो । यूकः मिहं लुङ्क नः मर्षि धृति नीताः
 ध सं लुङ्क नः । कृष्ण मल लुङ्क यम न कान च धावपि । स्या न दृष्ट प्रती नाति जा
 गलु कल जं वृद्ध ॥ विवि को पून विज नो मूर्च्छि नो मूरु सा कृथा । दो वा म्य यत्र पो
 लुको निगी धवल म चको ॥ सत्य माः प्रो विद्य मान ल्य हि न प ॥ रु च स न् ॥ पू

वस्तुतः कजिगस्यसि युक्तः ॥ निवागावाद्ययावमोऽस्मात् यश्च
 वर्मयम् । जगान्नकपुष्टकाः सन्नुक्तिनाडधिनस्त्वसी ॥ वृद्धिमत्स्याद्यमायना
 आदमोसादनाच्चिमो । अर्थसिधेयने वस्तुपथाजननिवृत्तिवृत्ति ॥ निदानागम
 याक्षीर्थमृषियुक्तजलसुबो । समर्थसिद्धताकिष्टसम्बद्धार्थहिमपित्र ॥ द

१८३

लमीस्त्रोतीरावागवृद्धोदीपापदवयसि । आस्त्रानीयत्तयावासायस्त्रास्त्रीसात्रः
 मानयाभज्जुतिपायवसोक्तोक्तो जीवमृगवत्सुबो । अत्रवादीरुनिन्दारू
 दयादोमृगवान्धवो । पादान्ध्रिष्टिदुर्गारूः चतुर्गार्कस्त्रमानुद ॥ निर्वीर
 जनवादपिस्तदाजम्बालाद्यया । सानावन्नुदिमजगत्याकुन्दादावृत्तवत् ॥

स्यात्सहादात्रनाधपिस्तदस्याद्यश्चनपिच॥गच्छाधकपिगमादिदादृष्ट्या
 मादवत्तद॥प्राधान्यवाजलिगचदृष्टीगककदास्तिया॥स्त्रीमपिगुह्यत
 सक्तायाजियाकावाजनामस्त॥धर्मविदुत्यूपनिषत्स्यादृगोवत्सवस्तनत्प
 दंयवतिगिगदहानलक्ष्मीस्तुवस्तुष्ट॥गद्यदंस्तविगमानयुगिष्ठाकृत्य

मास्य दं ॥ शिखि वृष मधु मोक्ष मृदु वागीशू काम लो ॥ मृदु त्यापद् निर्लीय मन्दा ॥
 लृक्षोऽनुमानो ॥ पुण्य ग्राम गिहो विदत्सु उगल्ला विष्णु नक्षो ॥ यामावटस्थ न्याः
 ग्रामावत्सु ॥ क्षोकाय उन्नति ॥ पथ्या हान्य मार्गस्थ वीव ॥ क्षोवि व ॥ क्षोच गो ॥
 पविधिर्यो ह्येय मन्दा ॥ मर्याया मूय सु र्य क ॥ वन्धकं यासु न च त ॥ पीज धि ॥

कानमाधय॥ समाभिन्नकानीवाकनियमं र्थसमर्थन॥ दायात्या दत्तवन्धः।
लकल्यादिबूनः। मर्यादयानिनिमित्तोपकृतस्यानिवर्तवन्॥ विधुर्वि
मोचतमसिपविद्धद विलवधि॥ विधुर्विधानदेव विपुलवि ४ पार्थन
वन्॥ वृद्धवृद्धोपलुगं पिस्तुन्धः समुदयपिच। दलानदविः। वृद्धोसिर्ना

१८५

सविमिलिचा॥ विधाविधोयकावचसाधूनमपिचलिषा। वक्ष्ययासूत्राणि
चसूत्रालयामृगंलुही॥ सन्धपुनिल्लामयादिल्लसंपुल्ययः। सृष्टा। मधूमध
पुष्यवसुकोडं चाथगमस्यपि॥ अगलिषुमूनकोपलुगं मन्धगर्विगो। एव
वन्धुवधिरुपनिर्द्धः। भवतुमिगभअविद्वनायवच्छोपुतिहोख्यागरुषि

नो॥ धा नैक सूर्य वक्रा विगुहान्न सान्न वन्निदिवा कनो॥ हृतात्मानो धा हृदयो मूर्ख
नीयो पृथग्जनो॥ धा वा (लो) ले लया मा (लो) पक्षि (लो) श व वक्षि (लो) । तत्र (लो) तालि १८३
खनि (लो) लिखि (लो) वक्षि व हि (लो) ॥ पुनिय स्यात्तु सित्प्रोपगुहा वध सादिनो॥
दोस्तानधिहया ना हा वा जिना (लो) यूपक्षि (लो) ॥ क्लृप्त्यतिजना जन्म क्लृप्ता मयथ

हानयधवषाच्चिर्वाहित दास्यन्धुग्ध क्वविनाचनाथक॥ गपिष्ट जिना विध्व
कर्मा क्लृप्तानि लिखिता॥ आत्मा यत्ना धृतिर्युद्धि॥ स्वरा वायु क्रवमच॥ गकाया
तु फमरुतो वषट्का दधना दधना॥ अतिमाना धा दिउय क्लृप्त पत्नर्यहि सया
शयना मय मूर्खिगु॥ गपिष्ट मूर्ख निनकव॥ अनः सूर्य पुरोवाजा मृग (लो) क्लृप्त

शुभं नमः ॥ यानि न्योनर्त्तकी मरु सुवर्णा मपि वाहिनी ॥ जादि न्यो वज्र गति गाव
 न्ना मां मपि कातिनी ॥ त्वत्पद ह यावपि न नू ॥ मूना ॥ जिहिका पित्त ॥ कुटुबिहा
 वयाव कुविमान लिषु उक्तं ॥ मन्दध क गतं क ॥ क ता वू प नि मरु ॥ १५ ॥ वदः
 कृतं ग या व प्र य म्ना वि पु ॥ पु जा प नि म उ त्सा ह न य दि हा को स च न य पि ग न्ध

१८१

न ॥ आ ग न्ध न प नी वा य ज व ना य्या य नार्थ कं ॥ य ज न ला ॥ म ॥ वि ॥ न ॥ व ॥
 न ह क पु या ज न ॥ जू व का ॥ ल लि गो क्त न की ज दा व चि द व नी ॥ उ क्त न यो न्ध न
 कु स नि वि क्षा म्ना पित्त ॥ य क्त न यु ति वा ॥ ध च वि वा धा व न ॥ पित्त ॥ मा व ॥ ल म्
 न ह क्त व ग तो उ य र्थ का पान ॥ नि व र्त्त ना प क व ल नू व ह्या म्ना च सा ध न ॥ नि र्वा

गर्तचै नष्टो दानन्यासाय्यः। यस्तु न विप्रदिशं। दास्य कामज कापजं॥ य
माकिशानि किञ्च लें गंत्वा यं। यलीयसि निधिं द क। य पर्व वत्स नं उक्तं १४४
धनि। अकार्यं गुणकोपीनं मेधुनं संगमो न ग। युधानं पनमात्माधी। यस्तु न
वृद्धिचिन्तया। यस्तु न यथा हलया निधनं कलना। या। अकन्दनं वादना का

न वृद्धिद हयमा। या। गृहद हलित्यस्य वाधा मान्य प च तु या। सन्निधे।
यसं स्नानं लब्धविद्रुय धानया। अस्तु द नं सन्निधे न मय धान व। सित्पु र। अ
नाधनं माधनं स्याद वा फो नाय। यधि कान्त्य क पून स हा वा धा स नं यपि। वत्सं स
जाति। यष्टपि वत सलिल काननं॥ गलि नं विन लला क या चालि नील। यस्तु न।

समानाः सत्समेकस्यः पित्रोः खलु च को॥ दीनं नूनं नूनं गंक्षो वनित्तनो गवत्ति
नो॥ अति यन्नायना कतिगुह्याय न नावयि ॥ कलायारुष्यं यदहं त्रिणीव स
रुगयि च पचि क दयनीयायः पयूको सलिलहि नो तं धूक् मम कृपति मयो
हवाविस् ईषा कपी वाद्या यथा एक ति फल न मा क्का दनं दयं॥ मल्यं गयति

ददावैरु मयि विनया क्रियाम्। प्राफुत्तयः सन्तया दूध मना रुया ॥ हं दलिं ग
जमीरु मीवी राह दय क कपी। विव। कुं कृत्ति वरा दिन रा व र्वन यिया निरु
मल गवत्तया न वादी नां र्वन यिव॥ गुह्यः स्यादु न स वल काल ग क व यि
च॥ निरुजय या स वि मिमी सि काश्च मा अरु ना तव सत्यं य ग न्ध र्वा दि य गाय

न॥ कमूलयः खदि जिहो सूर्यल चको। पर्वान्य लिङ्गभ्यामह पर्वगर्भस्य
पर्वजान्॥ कर्मो घट हस्तद्विभोति हो चलिउवालि। लो। कर्मो लू ॥ जडी लावो
॥ लू उक्रिल्लावनो॥ कर्मि उरुमर्हकागर्हः विमुक्तः एयापिच। ल्या हर्था
इइति ॥ पूसिद कइइलिहिया॥ ल्याम लानजतली वं कल्लु कन कयूमान्। क

१२०

स्थिति च नाहिन्नासुव हिन्निवि चलिहान्॥ सल्लसदिसु लू उक्रिय धरु वि
वत्तल ॥ किन ए ॥ पुगहो न भी कपि ह को पुव न मो॥ कर्मना लू वो कर्मो
लो यलो पव कर्मो। धर्मा पूथ यम न्या यस्वहा वाचान सा मया॥ उपा लें कें य
पर्वजान् तउ पक्ष वाचूय कर्म भवलि कथ ॥ पूर्व वदानी गमाना गमाव लिक्क॥

नेममाहोवलतामानीलवाइतिगच्छपि। गदादिरुधविन्दपिगममः कालोच
विक्रमगः उत्पन्नकः गच्छसनाग्वजानिः सल्ल कालक्रियशक्तिनिष्काल्याः कामा
यूक्तकर्मगच्छदिगच्छिषु॥ विष्णुमोहनिल्लकाः मास्यागुः। विद्यानिष्ठा
। सल्लमपूक्तपूजाग्वल्लमायाधन्यकउपू॥ सल्लमधनसमधनयपाधान

१२१

पुथमं विष्णु। वामोवल्लुपनीयो दोषधमो नूनकल्लितो॥ जीर्णधनविष्णुकच्छया
गच्छाममिमंदर्या। तुननगच्छो निलयापत्रयोक्तयो॥ सल्लुयैर्दवल्लध
लोशरुधोशरुजदिवो। पर्यन्तो नसदकल्लुदस्यादर्यः। सल्लिवेधः यागनिष्ठा
पूक्तकल्लियुधाययथावसन्नकम। पुथयाधीनगपथल्लनविष्णुसल्लुधु॥

[illegible][illegible]

हा धर्म कर्म मुहासुती ॥ कलुत्र ह वागर्गिनी विगल्याद नि कपि च ॥ यथा कपांशु ज्ञे
 यानि ति र्या नाम ॥ १ ॥ अथ न कानि कृति ॥ नि कपि जन संयुधा वरी ॥ उपाय ॥
 कर्म यथा च वि किला च न व किर्या ॥ कया सु र्य पि या कानि ॥ पुनि वि म्म म नाग
 म ॥ अथ काष्ठ रु म्यादि ॥ काष्ठ म ॥ अथ व न्ध न ॥ कला किर्या द व न्ध या म्मि म्म रु द्ध

१२३

धनादि ति ॥ अथ ॥ अर्जुन वा द पि ज द्वा क्ता ॥ धर्म पि च ॥ ग म्मि धी नो च व क्ता
 क ल्यो स र्जु नि ना म यो ॥ अथ नान न य मा र्था द ॥ अथ पृथ कु च र्च पि ॥ नृ र्थ ॥ अथ ग र्म
 नृ र्थ पि व द्वा या व लु व ग पि ॥ न्या य पि म ध ॥ सो न्य लु स न्द न सो म्य दे व न ॥ नि
 य द्वा व स नो वा नो स र्म नो य म्म नो ध नो ॥ अथ ग म्मि पि पि ग धो द्वा व नो य ग र्म ग यो ॥

पुकावोह दसाद ॥ अजाकावाविदिवाकृति ॥ किं ॥ भव धर्म्य ॥ कं ॥ मरु धर्मो ॥ अ
 उथा ॥ मलोलाका ॥ म्ही ॥ सुता ॥ सोपया ॥ धर्मो ॥ धन ॥ निदान ॥ या ॥ वलि ॥ सुता ॥
 वः ॥ कना ॥ भय ॥ दना ॥ सु ॥ नानी ॥ द ॥ धा ॥ अ ॥ म्हा ॥ क ॥ वा ॥ अ ॥ पि ॥ अ ॥ अ ॥ ग ॥ ट ॥ क ॥ मो ॥ का
 लग्न ॥ म्हा ॥ च ॥ द ॥ व ॥ नो ॥ ॥ सु ॥ ट ॥ पि ॥ वा ॥ प ॥ वि ॥ क ॥ न ॥ प ॥ र्थ ॥ क ॥ य ॥ नि ॥ वा ॥ न ॥ या ॥ च ॥ ग ॥ न ॥ स्या ॥ का

१२४

वा ॥ वा ॥ यो ॥ सु ॥ ट ॥ पि ॥ वा ॥ ॥ क ॥ र्च ॥ न ॥ थ ॥ पु ॥ ति ॥ क्का ॥ डि ॥ सु ॥ च्चि ॥ दा ॥ व ॥ द ॥ स ॥ ग ॥ न ॥ ॥ व ॥ द ॥ ह ॥ द ॥ ट ॥ पि ॥ वा
 द ॥ म ॥ कु ॥ मि ॥ श ॥ व ॥ च ॥ वा ॥ पि ॥ ॥ म ॥ श ॥ व ॥ म्हा ॥ य ॥ प ॥ म्हा ॥ ट ॥ पि ॥ सु ॥ व ॥ ट ॥ क ॥ र्च ॥ य ॥ व ॥ क्क ॥ न ॥ ॥ या ॥ ग ॥ म्हा ॥ न
 क्क ॥ र्च ॥ य ॥ व ॥ ग ॥ क ॥ ट ॥ वा ॥ ध ॥ ग ॥ क्कि ॥ न ॥ ॥ अ ॥ हि ॥ दा ॥ वा ॥ हि ॥ या ॥ ग ॥ च ॥ चो ॥ य ॥ ति ॥ न ॥ द ॥ न ॥ पि ॥ च ॥
 प ॥ नी ॥ च ॥ व ॥ ॥ र्च ॥ द ॥ का ॥ ॥ ग ॥ क ॥ ग ॥ म ॥ च ॥ प ॥ वि ॥ क्क ॥ द ॥ ॥ पि ॥ क्का ॥ वा ॥ वि ॥ न ॥ ट ॥ या ॥ द ॥ ह ॥ म्हा ॥ पि ॥ ॥ पी ॥ म्हा

यसासनोदाविदाः कृष्णगीदानक्षुतिहास्ययानकव ॥ विपूलनकूलविष्कोवशुः
 स्याउर्पिंगलुचिद्रासावावल्लिनीगचन्यार्थस्त्रीववल्लु ॥ पुनादवाद्युनकाव
 पलायनद्रनादनीमहावल्थइग्नियथकाकारंयूनसंक ॥ मत्सुनामगुहद
 धनदल्लयलयालिषुदवाहमववल्थइचिद्रास्त्रीवमनायुश्यावमकव

१२५

कवीवालीनवहदघटचना। नाचमयनदहस्तुपुतिहास्ययाभ। यमानिल
 लुचल्लार्कविष्मिल्लुवाजिषु ॥ लुकाहिकपिहकंयुहविनीकपिल्लुचिद्रा
 कर्प्यल्लपियागस्यायापलगतो ॥ नारुवाग्ननाफुस्याल्लुनीनिडापमीलयाः
 ॥ धागीस्याइपमानापिकिगिनयाकुडावाहपतदीवल्थगवद्याकल्लकाविका ॥ लि

पूक वः १४ मः १२ पिरुडं मागप विरुदं ॥ अल्यवयविमा ॥ १५ सामा १० का १२ १२ वः
न ॥ १५ ॥ अत्र रखा ॥ १२ ॥ अथ ॥ १२ ॥ कन १० ॥ १५ ॥ अथ ॥ १२ ॥ अथ ॥ १२ ॥ अथ ॥ १२ ॥
१२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥
१२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥

१२५

काद नय १२ सदा दान पित्रा ॥ अत्र विषय काय मय मय न यानि वा सति ॥ १२ ॥
१२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥
१२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥
१२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥ १२ ५ ॥

स्वयं वज्रास्त्रिहीनकयवो॥ गुरुं प्रथमं सिद्धांतं कुरुवायप निरुद्धं॥ ओषधीनं
मवंद॥ ओषधीनं॥ यनासुन॥ प्रकृतं कविहृत्॥ एताद्यहा॥ ओषधे जन॥ यामि
खन्दरुत्तपद्मनी॥ ओषधिवि॥ एता॥ अत्रुत्तमवका॥ एता॥ वधिपनिधानाकृति
हृदनादर्थ॥ किञ्चासीय विनावहिनवस्तनम॥ एता॥ नवमपि च॥ मृक्षपिपि॥ न

१२॥

हावया॥ प्रसिद्धलिपा॥ एता॥ गंउलिगी॥ ओषधेतामधश्चिथषवलनाकाफसी
नि॥ एता॥ वादल॥ प्रसिद्धाचायामपिवातामहृत्तिव॥ हृद्यलिग॥ एता॥ एता॥ प्रसि
धपदसूर्यथा॥ मल॥ एता॥ पापविहृत्किद्यान्यमु॥ एता॥ एता॥ एता॥ एता॥ कोवपि
दया॥ कील॥ पालिन॥ मीकपकिव॥ कला॥ निल्यकालरुद॥ एता॥ एता॥ एता॥

वलज्जुपि॥ अद्य मू विष्णो वला काल मर्यादया नपि॥ वरुला १ कलि
 कामया वरुला ग्ना १ सिमो लिम्बू॥ लीला विस्त्रियया रूपला १ कर्नादपि
 लालिग कृत्तिलाली मूलमायसि र्थया १ कर्नातेश्वर ज्ञानाया गवाक
 शानकावपि॥ लीलेखराव सद्यः सद्यः दुःखमरुले॥ कदि न्नग्नूजा १ क्ती

वसुधैव कुटुम्बकम् । अथः सवयथावस्थितं लोकांशमिति ध्यात्वा ॥ अथ
 नलपिपासालं च न वक्तुं धर्मं विष्णुः । इकूलं विष्णुः कः ॥ अथः सवयथावस्थितं लोकांशमिति ध्यात्वा ॥ अथ
 सानलं ॥ निनी गक वलमिति लिङ्गं । गत्यं कक लथा ॥ पर्याधिः ॥ कः म
 पूः अथः सवयथावस्थितं लोकांशमिति ध्यात्वा ॥ अथः सवयथावस्थितं लोकांशमिति ध्यात्वा ॥ अथः सवयथावस्थितं लोकांशमिति ध्यात्वा ॥

कनालादनुवर्तुं (न) चात्रोदकं च यः। लभः श्वर्कं कपिबालः स्यात्।
लघ्वलसं कृकया॥ दवदाको वनावस्थवकी जन्मदुर्बोहयो। मन्त्री सहायः
सचिवोपनि॥ त्विनवाधवा॥ अथ यत्नेन मया कर्माणां ज्ञानाधवाहवा
॥ रावः सत्यं स्यात्वाहावातिपायचं ह्यत्तजन्मसु॥ स्यादस्यादरुलं प्रथमसु

२००

वागर्कविभावने। अविष्मसं पद्मवपिनि कणावपि निद्रा च॥ उत्सुकामयथा
विष्मपसवं मउं हउत्सवमं अत्रुत्तवः पत्तावचसगां चमिमिनिश्चयः॥ स्मार्क
महउत्सवः स्मर्तवायापलञ्चयः॥ आयावियुगनयः। मुपावर्तवा
मगमाक्षयाहवदकीवतुनिश्चिन्ताव्यक्तिस्रः॥ स्मर्तवाचात्मनिस्वसिष्वा

स्त्रीयस्या। स्त्रियां धन॥ स्त्रीकरी वसुवंधयिनी वीप निप (स वि च। निवा (मो नीरु
न वया र्द्धं फल ह यथा ॥ ५ व्यास च प्रसा य पि सत्य मस्त्री यु जनुष ॥ स्त्रीर्वेन २०१
पू स कं णं व चालिं ग म यि कु म ॥ व। दो वि (लो कं लं मं स्कं नो ॥ नं हं वे ष्म म न
ओ दो च ना हि म नो ह्य (लो। दो ना णी पू ज म व द्यो दो व (लो कूल म स्क नो ॥ न ह य

का (लो वी का (लो नि र्दं ग रू मि ता ग था ॥ कृ णा क पू सि की ना ण ॥ इ ड क र्ष ल था
लि म् ॥ प द ल क्ष्म नि मि रू च य दं ग ॥ स्या त् कृ ण म म्भु च। द ला व र्त्मान क पि धा या
॥ ए र्का पि चा य ना ॥ व ला स्त्री क नि ती व र्त्त्या द क र्त्तान र्त्तान वि लि म्। स्या र्त्त क
॥ १ सा रू सि क ॥ क (भ ना म (ट ला व पि ॥ पु का (ला नि पू सि द पि लि णा व र्त्त पि वा

लिङ्गशास्त्रक॥ सूत्रमस्यावनिमित्तोपद्रवावात्मनान्वी। काकमत्स्यारवणे
धास्कोकशोदुष्टदावीन्लो ज्ञासीषः पुण्ड्रनाम्नेयश्च षष्ठसलमर्दन। प २०२
रु० सहस्रं रथूष्णीक० लिना वष्टकिनीटया गणुक लम्बविक् एष्टरु
नय मरुत प्रभाका श्री कृष्णलेखित विधाने । अथ दिय या गायु नं रक्तानि

लक पाक धातु मिथिना शूना गक धचि सुव व ह न क ति ड्र म ॥ क
 र्व क क नी माग्नि १ क र्प १ क ल्या रि धा वि णी ॥ पू ता य न लि या या च र पो न
 ष वि ष म सू च ॥ उ पा दा न पा मि ष त्या द य न ॥ ध पि कि लि षी ॥ स्या द षो ला
 क धा त्वे ॥ व त्स न व र्ष म लि या म् ॥ य क नृ ल्य क र्प य ङ्गा रि द्वा स वार्थ ना र

गिभल्लिदं तापि तेष पत्रं चर्कं कात्स्नानिष्टं यागपुण्यं च भिक्षुगणं
शान्तरुत्तल्य ल्याचिर्कं (८१) भागं ॥ न विन्यमन्ति दोहं सोत्तर्य वक्ष्यति
वस्तु वस्तुगन्तुकवर्षो दोषान्ननाश्वदिवो कस्तु ॥ ८२ ॥ ननादो विषवीथ्यु
(८३) नागडवनस्तु ॥ पूर्युक्तं सावर्गसो दोककुम्भं पिण्डं खल ॥ दवहदं न

२०३

तत्र (८४) मोवस्तु तत्र धर्मवस्तु विष्णोचवध ॥ मीत्वा गीर्हितासं
साहिदं पुथा ॥ लालसं प्रार्थतोत्तु वा हि सात्री यदि कर्मस्तु यत्
नस्तु पिण्डावो वादस्यो वादसी चन ॥ कालासा नन्युक्तं चिक्काणि गदक्षिप ॥ माया
पनाधयानाग ॥ खगवाल्यादिना च य ॥ गज ॥ पूनी यथा च मिहस्तु त्वगज ॥

नञागुल्लुप्यश्रयिनाहोक्षमकुलगतम॥ कन्द० पश्चिमिलयचतपदकु
 दिकर्मच॥ मदावलीसहस्राक्षनत० रवीधमवत्तनरा० डाक० यथाप्रयत्नो
 क० पय० श्रीवपयाम्परा० डाकादीकोवलप्रागन्तिशनिमग्नय॥ गजपरा २०४
 वदीकोवपल्लुक्क्यागलिषू॥ विद्वान्निदंथवारुत्तादिमायमिगयत्वमी॥

वृद्धपुंगवयाथायान्कनीयानुपवात्यथाभवनीयान्कनवया० साधीयान्साधूव
 रथाभदलप्रिवर्तनिर्वृत्तिप्रनामकादिशार्गुला॥ दाययि० क्कात्थनमनियत्थना
 गदकक॥ उलासु० १॥ कादिन॥ मोपुगद० पुगद० हायिच॥ यत्नीयनिजनादानसुल
 मखा० यनिग्रहा० दानं वृत्तगुहा० प्रोक्षामप्यावाहावनलिचा० यूहा० दन्दयादिर्व

लं प्य न्नां दं क्री सुभा यदा ॥ पवि च्छे द नृषा ह्नि व नि व ह्नि यि या प न ॥ ॥ आदी पद

थे ति या पि सी मा । थि क्षा तु या ग ऊ । आ यु ग म् । सु गो वा क् । आ तु स्मा क् । पि यी उ

२०५

या ॥ या य क् । सु ष द् । थि म् । धि दि र्त्सि ता न न्द । आ । चा त्वा च य स मा हान ग न स म्

च य ॥ स्व स्मा । ॥ ४ क म प् । थि दो पु क र्ध लं च न यानि । लि न् पु न् च वि न क् च

तु स्मा ह्नि व क्षा न । ॥ सक लो ह्नि क वा न चा ध्या ना इ नि स नी य या ॥ पु ता च्चि न म प्

॥ अ ३ ना य थि वि क ल्य या ॥ पु न स ह्नि थि ॥ ४ । थि स्मा क् । ल्य पु क् । तु ल्य या ॥ थि क

नू क म् । स गा व वि स या म लु न ग म् ॥ ह्नि ह्नि नू क म् । या म् । का व ह्नि वि वा द या ॥

पु नि पु नि नि । ॥ वी स्मा ल क् । दो पु या ग न ॥ ॥ नि ह्नि पु क् । वा । पु का । ॥ ॥ दि

समाधिषु। याचीयुवत्तासु धर्मपूर्वाः। र्थः। गतः। स्वपि॥ यावत्तावच्च सा कल्पव
क्षोमातयक्षावत्ता। मरुत्तानकानां रूपानि कास्त्रिष्यथादृष्टादृष्टानि वर्थकाणि
क्षान्तिनामकात्तयार्थः। नूदृष्टायाविकल्पे च पन्थात्तादृष्टायावत्ता॥ पुनः
यक्षावत्ता नूत्तानया मरुत्तानां॥ गह्वरसूत्रे यथापन्थात्तावत्तावत्तास्यपि॥

उपमाया विकल्प वास्तवित्व ईश गुप्त न ॥ अमास ह सुमी प च क चा विनिच
मूर्ध्नि च ॥ इव क मर्थ या व य न न न क ध नि व्य थ ॥ लक्ष्मी म र्थ सु र्व जा र्थ कि ए
का या श गुप्त न ॥ नाम प्र का र्थ सं ता र्थ का र्थ य ग क ल स न ॥ अ ल ल व द य्या
फि र्ग कि र्वा वि र्वा वा च क ॥ इ वि न क र्वा वि र्वा र्थ स म या नि क म र्थ या र्थ यून न

पुथमरुदनिर्निव्ययनिषधया॥स्यात्यवन्धविनागीतनिकटागमिकपूवा॥उ
वर्यनीचादनीचविल्लावनीकनोयय॥सुमचपनलाकसुवर्कलुसिंरायथाकि
ल॥निषधर्कौवोलंफानजिल्लासानूनयखल॥समीपातयनःगीधुसाकल्वा
हिमुरवःहिग॥नामयाकाधया॥प्राङ्गुर्भिःप्राध्यान्यनहुँ^{द्यपि}॥दिङ्मासमूय

२०१

याषचल्यानन्दधकनान्ध॥जुकनंतचमध्वत्यःयुकदसपुनिल्लान
गीर्कणधदनानन॥जुलावनकनानाधिमामालचवाव॥यक्रानवच
यदिचगल्लगदाजुसादय॥प्राका॥प्राइनावि॥त्यादामवयनममन॥सुम
कगलुयनित॥तर्चगाविष्वगित्यापि॥जुकामानूमनोकाममतल्लयापनभ

सुवा॥ धनू चत्यादिना (धातो कश्चिन्नामस्य ददन्ति १ समं ३ ४ समं गच्छिय आत्मे
 दुय धायथ ॥ मृपानि धर्मचपिग (धय धमर्थं दुय धातर्थं ॥ ह्यन वदु पून चैव
 एव धान एवाच का ॥ प्रागमीनार्थकं नूनमवध निव्ययदयं । सम्यद्वर्ष
 वनत्वद्वाभिभवत्ययमात्मना ॥ अल्पनीचैर्महत्त्वैः ॥ प्रायारुत्वा रूपाणा

ने॥ समानि त्वयि वरिष्ठाः क्षमातीतः क्लमदन्ति॥ अस्मि सत्यव्रथाः काद्वर्तय॥ १९
नूनयत्ययि॥ इति कल्याणवार्त्तवशात् न मानसो॥ यत्नवर्धनं निन्दया इदं सु
दृष्टव्यं॥ सायं सायं पुण्यपाठः पूजा वं नि कषाति क॥ यद्वृत्त्यवशेषमाध
कर्वन् गन्तव्यं॥ अथागच्छ पर्वं श्री लक्ष्मीपद्मं लवामनात्॥ तथा धनान्यान् यत्नं

मवात्यर्थघृणादयः॥ उरुयधूः॥ उरुयधूः॥ पवत्यक्रियवद्यपि॥ कागननाग

न॥ क्रियः॥ पवत्यः॥ गत्यवदनि॥ गदातदानीयूगयदकदासर्वदासदा॥ न

हिंसुमीदानीमधूनासंपूर्णगथादि॥ दगकालद्वयदोपाउदपुत्रयादय

॥॥ ॥॥ निजुययवर्त॥॥ ॥॥ सुलिंग॥॥ सु॥ सनादिकुरुदिगसमा

२०२

सजे॥ अनेके॥ संगुहालिंगं संकीर्तुवदि॥ दानयत्॥ लिङ्गलोषविधिषापीविः

लोषेर्यययाधित॥ क्रियामीदृदिनामेकाचसुथानिपालितामच॥ नमविश्रुनि

सावलीवीसादिगुनदीक्रिया॥ अदकोर्दिगुनका॥ धनिस्त्यागयूमादिति॥ तल

वृन्दयनिकञ्जशवेनमेधूनिकादिवृत्॥ सुहावादावनि॥ किन्तुधूदाचवधायू

चनः सप र्यायाः सुवा सुवाः सग्नयागडिमद्यास्त्रिद्रफालासि सुवानयः क पूवन
दपूषाः पुपविकूपपवस्वकाः क्षान्यधनिवधाकात्मगुल्मानार्थकर्मः कनः पुः
कृदाईकक ८८ क गनरव सुताः अक्राहकाः क उरु दानागकीः पागसं ककाः
शीयिक्षाघाधनिर्यासा असनका अवाधिताः क ११ व जी उ व तैः क निदि त्वा पुन

विनामकाऽकषऽहमवापाकाय दकाय दकाऽमीऽपथनयसठापा
काऽगशरवाऽधनऽकयाऽनस्यकर्त्तारवचयऽजद्रुद्रयाथचऽल्यकर्त्तनी
मनिहयकाऽधाऽपिऽसादिताऽन्यतऽर्द्धदऽधवगवासमादतऽकातऽल्यर्ध
पर्यायकऽवरिऽदर्वकापिच॥वटकऽनूवाकऽनलकऽवकऽउदकऽसूखा

त्र्यम्बकम् सुविष्टं पदं यदाऽख्यता ॥ खट्वाद्यानद्यदहस्ता ॥ यिष्टुः ॥ गलुपिचि
 लुवता ॥ गङ्गाकन ॥ अलुगुशवनलु ॥ यकि ॥ अष्टदाशदृतिः ॥ गीमन्तद्विभावासका
 मीथवृद्धदा ॥ काणमक्षद्विदः ॥ कन्दः ॥ रुनमुपोस्तयको ॥ अगपः ॥ कश्चि यतातिः
 कनपश्चनकदना ॥ पूनः ॥ रुनपश्चका ॥ अतहि ॥ गुलपूगला ॥ वगालतल्लमल्ल

२१२

अथपूनादा ॥ अथयदितः ॥ कल्माषानरुत ॥ अथेवसकटाहः ॥ यगङ्गुहः ॥
 ॥ मियुल्लिङ्ग ॥ अथ ॥ ॥ दिदीनयश्चखानव्यवर्तु ॥ अथगृहिमादकं ॥ गीमास
 मासुत्रभिन्नमूखाकिडविद्यवले ॥ हलहमलुल्यला ॥ हसुख ३ ॥ खलुतालुसं
 ॥ जलपूष्यानिलवले ॥ अथनान्यनूयैलेन ॥ काद्यानादिहं ॥ अथान्यावालकामि

273

दि ११॥ उपर्युक्तमात्रात्तदादित्युक्तानां कायं कायं कायं मादिकं
 लीनवनामस्तु॥ शाब्दकविज्ञानसमूहतावकर्म ॥ ११॥ अदनाः पुत्र्याः
 पूर्यस्तदिनात्प्राप्त्यहः पत्रशक्रियायानां दकायकं प्रकृतादकं। या
 वमिहं गृहं लूटं किं गृहं मर्मथाजन ॥ वाजस्यं वाजययंगयययकगोफ

वनारकः स्यात्तिवर्षकायाः लिम्बितुः ॥ मृषासृपाटीककैन्धूर्यष्टिः सीटीकटीक
 टी ॥ ॥ नितिकुप्यं लिम्बितुः ॥ ॥ नितिकुप्यं लिम्बितुः ॥ ॥ नितिकुप्यं लिम्बितुः ॥ ॥
 कविचन्द्रः ॥ ओविचन्द्रः ॥ ओविचन्द्रः ॥ ओविचन्द्रः ॥ ओविचन्द्रः ॥ ओविचन्द्रः ॥ ओविचन्द्रः ॥
 सनाः ॥ सनाः ॥ सनाः ॥ सनाः ॥ सनाः ॥ सनाः ॥ सनाः ॥

२१५

यन्नं गालवकादिगुः ॥ यन्नं गालवकादिगुः ॥ यन्नं गालवकादिगुः ॥ यन्नं गालवकादिगुः ॥
 ॥ नितिकुप्यं लिम्बितुः ॥ ॥ नितिकुप्यं लिम्बितुः ॥ ॥ नितिकुप्यं लिम्बितुः ॥ ॥
 लिम्बितुः ॥ लिम्बितुः ॥ लिम्बितुः ॥ लिम्बितुः ॥ लिम्बितुः ॥ लिम्बितुः ॥ लिम्बितुः ॥
 गालवकादिगुः ॥ गालवकादिगुः ॥ गालवकादिगुः ॥ गालवकादिगुः ॥ गालवकादिगुः ॥ गालवकादिगुः ॥ गालवकादिगुः ॥

उद्यत्ति याथागायादिति ४ पवनगमि नश कन ४ कर्तु र्यो स र्ज्ञा यी क र्त्वा क र्त्तु वि क र्त्तु
 दि। ज्ञाना यना गन का य धनाना थ र्द का ॥ ४ ॥ य द्वा र्त्तु या लि प्र स मा य प्र द स्म
 हि द वा य र्त्तु। पन वि ना ध लि ग तु र्त्तु य नि कृ य या ग न ॥ ॥ ० ॥ ति लि ग दि स र्ग २१५
 द व र्त्तु ॥ ॥ ० ॥ य म न र्त्तु र्त्तु क मो ना म लि र्त्तु न र्त्तु म स न वि ल य नि द्वा दि का धु कि
 का र्त्तु स मा र्त्तु ॥ ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ प र्त्तु न व क्रि व शो धु वि धु क काल नि ल
 त य न र्त्तु दि न लि न। ॥ ० ॥ म न र्त्तु कि न मा १ म न र्त्तु र्त्तु ली लि र्त्तु उ म न र्त्तु र्त्तु मि न र्त्तु ॥



2217
1

*
Lautya
San Salvador

2217